खोज गाँधीजी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव की त्रैमासिक पत्रिका वर्ष-६ □ अंक-२ □ अप्रैल-जून, २०१७

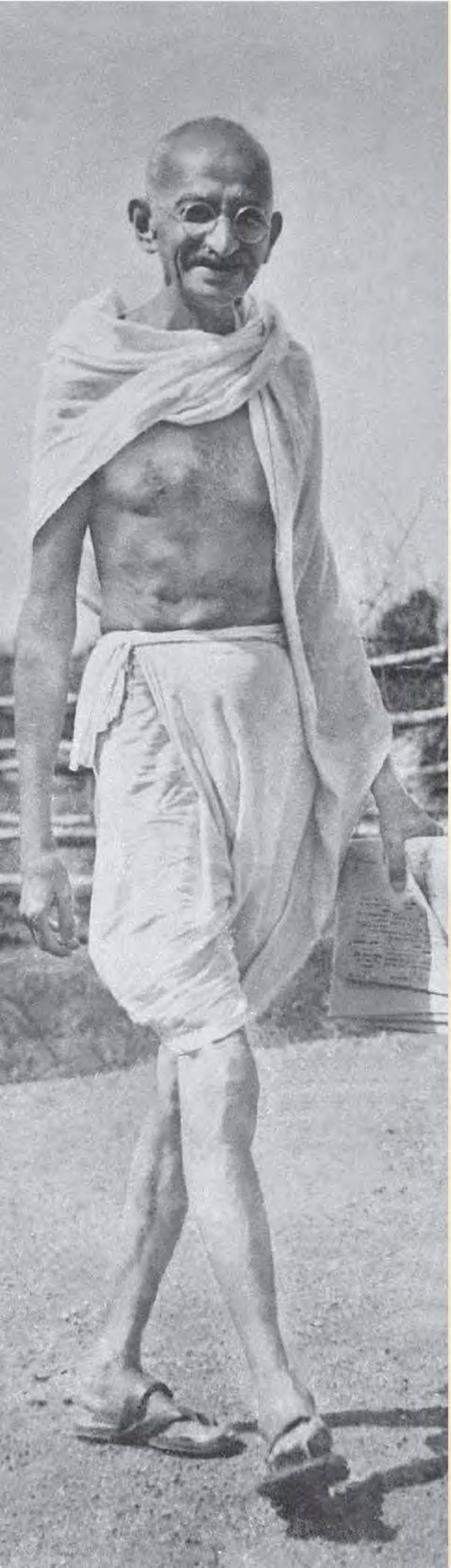

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित -

खोज गाँधीजी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित

वर्ष-6 □ अंक-2 □ अप्रैल-जून, 2017

सत्याग्रह की जड़ मनुष्य-स्वभाव पर विश्वास रखने में है।

– महात्मा गाँधी

इस अंक में- .... **पृष्ठ**

सम्पादकीय.. १
धर्मों का परिचय २
सत्याग्रह की फलश्रुति चम्पारण की गाथा ४
लाल नील ७
आज की समाज रचना – *(डॉ. भवरलालजी जैन)*............................ ९
फाउण्डेशन की गतिविधियाँ... १०-१६

संस्थापक
स्व. डॉ. भवरलालजी जैन

मार्गदर्शक
न्या. चन्द्रशेखर धर्माधिकारी

प्रबन्ध सम्पादक
अशोक जैन

मानद सम्पादक
डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय

सम्पादकीय मंडल
अश्विन झाला, भुजंगराव बोबडे

कला एवं अक्षर-सज्जा
भूषण मोहरीर

सम्पादकीय कार्यालय
गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118, जलगाँव – 425 001.
दूरभाष : 0257-2260011/22, 2264801, मो.: 9404955272
फैक्स : 0257-2261133
वेबसाइट : www.gandhifoundation.net
ई-मेल : info@gandhifoundation.net
CIN No.: U73200MH2007NPL169807

यह पत्रिका गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, जलगाँव-425 001 (भारत) के लिए प्रबन्ध सम्पादक द्वारा प्रकाशित तथा प्रिंटवेल, जी-१२, एम.आय.डी.सी., चिकलठाणा, औरंगाबाद – ४३१००६ (महाराष्ट्र) द्वारा मुद्रित।
वर्ष-६, अंक २, अप्रैल-जून, २०१७

सभी चित्र गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन संग्रह से।

सम्पादकीय...

कृषि आंदोलन: समाधान क्या?

प्रसिद्ध चिंतक थोरो का कथन है कि 'कम से कम शासन करने वाली सरकार सर्वोत्तम सरकार होती है।' किन्तु कभी ऐसा भी देखने को मिलता है कि जहां शासन प्रणाली सुखकर नहीं होती वहां लोकतंत्र पर खतरा भी आसन्न होता है। विश्व में ऐसे कई आंदोलन हुए जहां व्यवस्था के खिलाफ सामूहिक रूप से आवाज उग्र कर अधिकार प्राप्त करने का प्रयास किया गया, और लोग उनमें सफल भी रहे। पर सवाल यह है कि किसी भी व्यवस्थापन में शाश्वतता प्राप्त करने का जरिया क्या हो सकता है? या क्या होना चाहिए? क्योंकि ऐसा पाया गया है कि ऐसे आंदोलनों में राष्ट्र की सम्पत्ति का नुकसान अधिक मात्रा में होता दिखायी देता है।

स्वतंत्रता के बाद भी हमारे देश में प्रादेशिक विषमता के आधार पर कई तरह के आंदोलनों ने जन्म लिया है। और यह अब तक जारी है, इनमें नये नये मुद्दे भी सामने आते रहे है। कहीं राज्य की सीमा के संदर्भ में, तो कहीं अलग राज्य की माँग को लेकर भी आवाज उठती रही है। संगठित और असंगठित क्षेत्र के संदर्भ में भी व्याकुलता सामने आती रही है। पिछले कुछ समय पहले महाराष्ट्र में किसानों ने उत्पादों की कीमत अच्छी मिले और उनके कर्ज माफ किए जायें, इस सम्बन्ध में किसान आंदोलन किया था। कई जगहों पर किसान सड़कों पर उतर आए थे, और इस दौरान शाक-भाजी और दूध जैसी सामग्री की सप्लाई को रोक दिया गया था। कई जगहों पर दूध व अन्य सामग्री को रास्ते पर फेंक दिया गया। ताकि सरकार किसानों के प्रति अपना रवैया स्पष्ट कर सके। पर क्या इस तरह के आंदोलन जायज है? क्योंकि किसानों के पास गवाने के लिए ज्यादा कुछ नहीं रहता। जो है वह कृषि व पशुपालन द्वारा निर्मित सामग्री है। और इन चिंजो का उत्पादन करने में कितनी मात्रा में बहुमूल्य संसाधनों का उपयोग होता है। अनाज का उत्पादन करने के लिए पानी, मेहनत समय, आर्थिक संसाधन आदि। किसान जब भूमि में बीज लगाते है तब नई उम्मीद की संभावना को देखते है। वे केवल बीज ही नहीं लगाते पर अपने भविष्य की आशाओं को लगाते हैं, किन्तु इतना परिश्रम करने के बावजूद भी स्थिरता हासिल नहीं होती, तब स्वाभाविक रुप से किसान मायूस हो जाता है। हमारा देश कृषि प्रधान देश है, लेकिन आजादी के सत्तर साल के बाद भी हम अपनी कृषि संस्कृति को न्यायपूर्ण नजरिये से नहीं देख पाये। कृषि के सम्बन्ध में अब तक हमारे पास कोई स्थायी और शाश्वत नीति नहीं है। किसान की आत्महत्या के किस्से दिन-प्रतिदिन सामने आ रहे हैं। किसान-आंदोलन और किसान-आत्महत्या जैसी घटनाओं को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि अब स्थिति सामान्य नहीं रही।

किन्तु आज का कृषि आंदोलन कितना हिंसक हो चुका है। राष्ट्र की सम्पत्ति को आग के हवाले कर हम किसका नुकसान कर रहे हैं? आंदोलन में हिंसा काम में नहीं लेनी चाहिए। और सबसे महत्वपूर्ण यह है कि लोक आंदोलनों में कभी राजनीतिक मकसद की मिलावट नहीं होनी चाहिए। समाधान तो आपसी सहमति बनाने से होगा जिसके लिये हिंसा का रास्ता छोड़ना पहली शर्त होनी चाहिये। गाँधीजी ने आखिर अहिंसा के रास्ते को अपनाकर ही तो तत्कालीन किसान आन्दोलनों का समाधान ढूंढा था।

गाँधीजी ने अपने जीवन के दौरान करीब १६ सत्याग्रह किए थे। इनमें से किसी भी सत्याग्रह में राष्ट्रीय सम्पत्ति का नुकसान हुआ ऐसी घटना कहीं पर भी दर्ज नहीं हुई। जब भी ऐसा प्रतीत हुआ उन्होंने सत्याग्रह को मौकूफ कर दिया। सत्याग्रह की लड़ाई एक मन्त्र सिखाती हैं और वह यह है कि हमें हथियार से नहीं लडना है, हथियार नहीं उठाना है बल्कि सत्य के द्वारा लडना है। जिसके पास सत्यरूपी हथियार है उसे किसी दूसरे हथियार की जरूरत नहीं है। कष्ट सहकर कष्टों से मुक्त होने का नाम सत्याग्रह है। और यह पद्धति के आधार पर विश्व के कई महान दिग्गजों ने सत्याग्रह कि पद्धति को अपनाया है। इनमें मार्टिन ल्यूथर किंग जू., नेलशन मंडेला, दलाई लामा, मलाला युसुफ़जई आदि। इस सूची में ऐसे कई नाम आ सकते है।

गाँधीजी के द्वारा किए गये सत्याग्रह में तीन सत्याग्रह किसान और कृषि से सम्बन्धित थे। सन् १९१७ में चम्पारण सत्याग्रह, सन् १९१८ में खेड़ा सत्याग्रह और सन् १९२८ में बारदोली सत्याग्रह। इन तीनों सत्याग्रह में सरकार की दमनकारी नीति के खिलाफ सत्याग्रह के अमोघ हथियार से जनसमुदाय को तैयार किया गया था। तीनों जगह पर सत्याग्रह का तत्त्वदर्शन कामयाब रहा। अहिंसक रूप से लड़ाई करने की इस पद्धति ने देश व दुनिया को एक नया मार्ग दिया। इन तीनों सत्याग्रह में गाँधीजी ने सामुदायिक प्रयास को केन्द्र स्थान पर रखा था। केवल हड़ताल ही नहीं किन्तु हमारी व्यवस्था को मजबूत करना है। इससे ही हम स्थिरता प्राप्त कर सकेंगे। गाँधीजी ने न केवल सत्याग्रह पद्धति दी है किन्तु सहकारिता के आधार पर कृषि को शाश्वत बनाने के तरीके भी बताये।

हमारी आबादी बढ़ती जा रही है और उसके साथ किसान की व्यक्तिगत जमीन कम होती जा रही है। नतीजा यह हुआ की प्रत्येक किसान के पास जितनी चाहिए उतनी जमीन नहीं है। पर सीमित मात्रा में जमीन होते हुए भी हम कई गुना उत्पादन प्राप्त कर सकते है। शर्त यह है कि सहकारिता के आधार पर कृषि और विपणन व्यवस्था को मजबूत करना है। जब किसान सहकारिता के आधार पर कृषि करेंगे तब स्वाभाविक रूप से व्यवस्था को निर्माण कर पायेंगे। प्रत्येक किसान अपने पास महंगे साधन सामग्री को नहीं रख सकता। और यह रखना भी सीमांत किसान की शक्ति के बिलकुल बाहर है। इसीलिए कृषि व पशुपालन के हर एक कार्य में सामुदायिक रूप से सहकारिता का निर्माण होना चाहिए। गाँधीजी कहते है कि जब हम अपनी जमीन को सामुदायिक पद्धति से जोतेंगे, तभी उससे फायदा उठा सकेंगे।

वर्ष २०१७ को चम्पारण सत्याग्रह के शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। प्रस्तुत अंक में सुधी पाठक चम्पारण सत्याग्रह पर विशेष प्रस्तुति के तहत दो लेख पढ़ सकेंगे। साथ-साथ गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक डॉ. भवरलाल जैन की कृति 'आज की समाज रचना' से एक लेख तथा हमेशा की तरह फाउण्डेशन की गतिविधियां भी पाठकों के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं।

(डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय)

धर्मों का परिचय

*'**खोज गाँधीजी की**' के प्रत्येक अंक में महात्मा गाँधी द्वारा लिखे 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से एक लेख धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि जनमानस महात्मा गाँधी की आत्मकथा से उन्हीं के शब्दों में परिचित हो सके। विलाय़त के दौरान मोहनदास ने धर्मों के सम्बन्धित कई साहित्य का पठन किया। जिससे धर्मों के प्रति उनकी एक समझ बनी। उन अनुभव की गाथा को दर्शाता हुआ प्रस्तुत है आत्मकथा से अगला प्रकरण।* – **सम्पादक**

विलायत में रहते मुझे कोई एक साल हुआ होगा। इस बीच दो थियॉसॉफिस्ट मित्रों से मेरी पहचान हुई। दोनों सगे भाई थे और अविवाहित थे। उन्होंने मुझसे गीताजी की चर्चा की। वे एडविन आर्नल्ड का गीताजी का अनुवाद पढ़ रहे थे। पर उन्होंने मुझे अपने साथ संस्कृत में गीता पढ़ने के लिए न्योता। मैं शरमाया, क्योंकि मैंने गीता पढ़ी ही नहीं है, पर मैं उसे आपके साथ पढ़ने को तैयार हूँ। संस्कृत का मेरा अभ्यास भी नहीं के बराबर ही है। मैं उसे इतना ही समझ पाऊँगा कि अनुवाद में कोई गलत अर्थ होगा तो उसे सुधार सकूँगा। इस प्रकार मैंने उन भाइयों के साथ गीता पढ़ना शुरु किया। दूसरे अध्याय के अंतिम श्लोकों में से

ध्यायतो विषयान्पुंस: संगस्तेषूपजायते।
संगात्संजायते काम: कामात्क्रोधोभिजायते।।
क्रोधाद् भवति सम्मोह: सम्मोहात्स्मृतिविभ्रम:।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।

इन श्लोकों का मेरे मन पर गहरा असर पड़ा। उनकी भनक मेरे कान में गूँजती ही रही। उस समय मुझे लगा कि भगवद्‌गीता अमूल्य ग्रंथ है। यह मान्यता धीरे-धीरे बढ़ती गयी, और आज तत्त्वज्ञान के लिए मैं उसे सर्वोत्तम ग्रन्थ मानता हूँ। निराशा के समय में इस ग्रन्थ ने मेरी अमूल्य सहायता की है। मैं इसके लगभग सभी अंग्रेजी अनुवाद पढ़ गया हूँ। पर एडविन आर्नल्ड का अनुभव मुझे श्रेष्ठ प्रतीत होता है। उसमें मूल ग्रन्थ के भाव की रक्षा की गयी है, फिर भी वह ग्रन्थ अनुवाद-जैसा नहीं लगता। इस बार मैंने भगवद्‌गीता का अध्ययन किया, ऐसा तो मैं कह ही नहीं सकता। मेरे नित्यपाठ का ग्रन्थ तो वह कई वर्षों के बाद बना।

इन्हीं भाइयों ने मुझे सुझाया कि मैं आर्नल्ड का बुद्ध-चरित पढ़ूँ। उस समय तक तो मुझे सर एडविन आर्नल्ड के गीता के अनुवाद का ही पता था। मैंने बुद्ध-चरित भगवद्‌गीता से भी अधिक रस-पूर्वक पढ़ा। पुस्तक हाथ में लेने के बाद उसे समाप्त करके ही छोड़ सका।

एक बार ये भाई मुझे ब्लैवट्स्की लॉज में भी ले गये। वहाँ मैडम ब्लैवट्स्की के और मिसेज एनी बेसेंट के दर्शन कराये। मिसेज बेसेंट हाल ही थियॉसॉफिकल सोसायटी में दाखिल हुई थीं। इससे समाचार पत्रों में इस सम्बन्ध की जो चर्चा चलती थी, उसे मैं दिलचस्पी के साथ पढ़ा करता था। इन भाइयों ने मुझे सोसायटी में दाखिल होने का भी सुझाव दिया। मैंने नम्रतापूर्वक इनकार किया और कहा, ''मेरा धर्मज्ञान नहीं के बराबर है, इसलिए मैं किसी भी पंथ में सम्मिलित होना नहीं चाहता।'' मेरा कुछ ऐसा खयाल है कि इन्हीं भाइयों के कहने से मैंने ब्लैवट्स्की की पुस्तक 'की टु थियॉसॉफी' (थियॉसॉफी की कुँजी) पढ़ी थी। उससे हिन्दू धर्म की पुस्तकें पढ़ने की इच्छा पैदा हुई और पादरियों के मुँह से सुना हुआ यह खयाल दिल से निकल गया कि हिन्दू धर्म अन्धविश्वासों से ही भरा हुआ है।

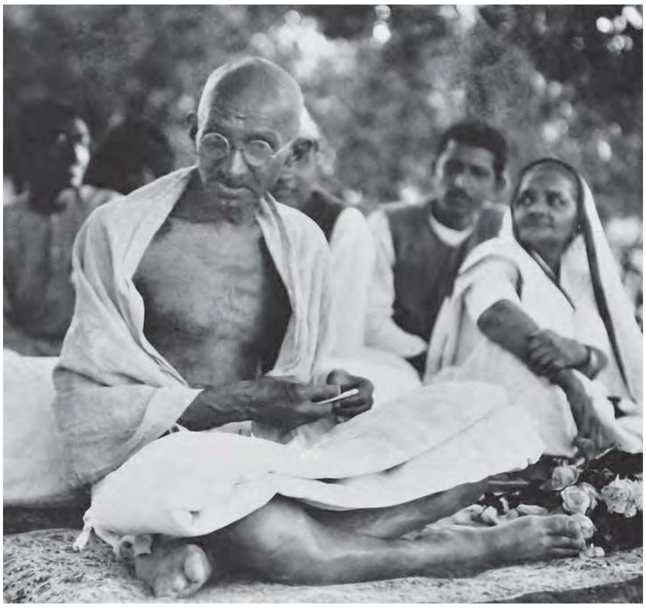

प्रार्थना सभा के दौरान महात्मा गाँधी, साबरमती आश्रम, अहमदाबाद, १९२८

इन्हीं दिनों एक अन्नाहारी छात्रावास में मुझे मैंचेस्टर के एक ईसाई सज्जन मिले। उन्होंने मुझसे धर्म की चर्चा की। मैंने उन्हें राजकोट का अपना संस्मरण सुनाया। वे सुनकर दु:खी हुए। उन्होंने कहा, ''मैं स्वयं अन्नाहारी हूँ। मद्यपान भी नहीं करता। यह सच है कि बहुत से ईसाई मांस खाते हैं और शराब पीते है; पर इस धर्म में दो में से एक भी वस्तु का सेवन करना कर्तव्य रुप नहीं है। मेरी सलाह है कि आप बाइबल पढ़ें।'' मैंने उनकी यह सलाह मान ली। उन्होंने बाइबल खरीद कर मुझे दी। मेरा कुछ ऐसा खयाल है कि वे भाई खुद ही बाइबल बेचते थे। उन्होंने नक्शों और विषय-सूची आदि से युक्त बाइबल मुझे बेची। मैंने उसे पढ़ना शुरु किया, पर मैं 'पुराना इकरार' (ओल्ड टेस्टामेण्ट) तो पढ़ ही न सका। 'जेनेसिस' - सृष्टि-रचना- के प्रकरण के बाद तो पढ़ते समय मुझे नींद ही आ जाती। मुझे याद है कि मैंने बाइबल पढ़ी है यह कह सकने के लिए मैंने बिना रस के और बिना समझे दूसरे प्रकरण बहुत कष्ट-पूर्वक पढ़े थे। 'नम्बर्स' नामक प्रकरण पढ़ते-पढ़ते मेरा जी उचट गया था।

पर जब 'नये इकरार' (न्यू टेस्टामेण्ट) पर आया, तो कुछ और ही असर हुआ। ईसा के 'गिरि-प्रवचन' का मुझ पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। उसे मैंने हृदय में बसा लिया। बुद्धि ने गीताजी के साथ उसकी तुलना की। 'जो तुझसे कुर्ता माँगे उसे अंगरखा भी दे दे', 'जो तेरे दाहिने गाल पर तमाचा मारे, बायाँ गाल भी उसके सामने कर दे' - यह पढ़कर मुझे अपार आनन्द हुआ। शामळ भट्ट के छप्पय की याद आ गयी। मेरे बालमन ने गीता, आर्नल्ड-कृत बुद्ध-चरित और ईसा के वचनों का एकीकरण किया। मन को यह बात जँच गयी कि त्याग में धर्म है।

इस वाचन से दूसरे धर्माचार्यों की जीवनियाँ पढ़ने की इच्छा हुई। किसी मित्र ने कार्लाइल की 'विभूतियाँ और विभूति-पूजा' (हीरोज एण्ड हीरोवर्शिप) पढ़ने की सलाह दी। उसमें से मैंने पैगम्बर (हजरत मुहम्मद) का प्रकरण पढ़ा, और मुझे उनकी महानता, वीरता और तपश्चर्या का पता चला।

मैं धर्म के इस परिचय से आगे न बढ़ सका। अपनी परीक्षा की पुस्तकों के अलावा दूसरा कुछ पढ़ने की फुरसत मैं नहीं निकाल सका। पर मेरे मनने यह निश्चय किया कि मुझे धर्म-पुस्तकें पढ़नी चाहिये। और सब मुख्य धर्मों का परिचय प्राप्त कर लेना चाहिये।

नास्तिकता के बारे में भी कुछ जाने बिना काम कैसे चलता? ब्रेडला का नाम तो सब हिन्दुस्तानी जानते ही थे। ब्रेडला नास्तिक माने जाते थे। इसलिए उनके सम्बन्ध की एक पुस्तक पढ़ी। नाम मुझे याद नहीं रहा। मुझ पर उसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। मैं नास्तिकता-रुपी सहारे के रेगिस्तान को पार कर गया। मिसेज बेसेंट की ख्याति तो उस समय भी खूब थी। वे नास्तिक से आस्तिक बनी हैं, इस चीजने भी मुझे नास्तिकवाद के प्रति उदासीन बना दिया। मैंने मिसेज बेसेंट की 'मैं थियॉसॉफिस्ट कैसे बनी?' पुस्तिका पढ़ ली थी। उन्हीं दिनों ब्रेडला का देहान्त हुआ था। वोकिंग में उनका अंतिम संस्कार किया गया था। मैं भी वहाँ पहुँच गया था। मेरा खयाल है कि वहाँ रहनेवाले हिंदुस्तानियों में से तो एक भी बाकी नहीं बचा होगा। कई पादरी भी उनके प्रति अपना सम्मान प्रकट करने के लिए आये थे। वापस लौटते हुए हम सब एक जगह रेलगाड़ी की राह देखते खड़े थे। वहाँ उस दल में से किसी पहलवान नास्तिक ने इन पादरियों में से एक के साथ जिरह शुरु की:

''क्यो साहब, आप कहते हैं न कि ईश्वर है?''

उन भद्र पुरुषने धीमी आवाज में उत्तर दिया: ''हाँ, मैं कहता तो हूँ।''

वह हँसा और मानो पादरी को मात दे रहा हो इस ढंग से बोला: ''अच्छा, आप यह तो स्वीकार करते हैं न कि पृथ्वी की परिधि २८,००० मील है?''

''अवश्य।''

''तो कहिये, ईश्वर का कद कितना होगा और वह कहाँ रहता होगा?''

''अगर हम समझें तो वह हम दोनों के हृदय में वास करता है।''

बच्चों को फुसलाइये, बच्चों को, कहकर उस योद्धाने अपने आसपास खड़े हुए हम लोगों की तरफ विजयी की दृष्टि से देखा। पादरी नम्रतापूर्वक मौन रहे। इस संवाद के कारण नास्तिकवाद के प्रति मेरी अरुचि और बढ़ गयी।

-'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से साभार, पृष्ठ क्र.६१-६४

लोहे को पानी कर देना!

जब-जब भारत पर भीर पड़ी, असुरों का अत्याचार बढ़ा;
मानवता का अपमान हुआ, दानवता का परिवार बढ़ा।

तब-तब हो करुणा से प्लावित करुणाकर ने अवतार लिया;
बनकर असहायों के सहाय दानव-दल का संहार किया।

दुख के बादल हट गए ज्ञान का चारों ओर प्रकाश दिखा;
कवि के उर में कविता जागी, ऋषि-मुनियों ने इतिहास लिखा।

जन-जन में जागा भक्ति-भाव, दिशि-दिशि में गूंजा यशोगान,
मन-मन में पावन प्रीति जगी, घर-घर में थे सब पुण्यवान।

सतयुग त्रेता देता बीता यश-सुरभि राम की फैलाता;
द्वापर भी आया, गया कृष्ण की नीति-कुशलता दरशाता।

कलियुग आया, जाते-जाते उसके गाँधी का युग आया;
गाँधी की महिमा फैल गई, जग ने गाँधी का युग गाया।

कवि गद्‌गद हो अपनी-अपनी श्रद्धांजलियाँ भर-भर लाए;
रोमा रोलां, रवि ठाकुर ने उल्लसित गीत यश के गाए।

इस समारोह में रज-कण-सी मैं क्या गाऊँ, कैसे गाऊँ?
इतनी विभूतियों में सम्मुख घबराती हूँ, कैसे जाऊँ?

दुनिया की सब आवाजों से जो ऊपर उठ-उठ जाती हैं;
लोहे से लोहा बज़ने की आवाज उस तरफ आती है।

विज्ञान-ज्ञान की परिधि आज अब नहीं किसी बन्धन में हैं;
सब ओर एक ही बात, एक ही चर्चा यह जन-जन में है।

कैसे लोहे में धार करें? कैसे लोहे की मार करें?
मानव दानव बन किस प्रकार आपस में घोर प्रहार करें।

चल जाए तोप, जल जाए विश्व, बम लेकर निकले वायुयान,
लोहे के गोले बरस पड़े वर्षा की बूंदों के समान।

यह लोहे के युग की महिमा-श्मशान बन गए ग्राम-ग्राम;
यह लोहे के युग की क्षमता-मिट गए धरा के धाम-धाम।
इस लौह-पान ने क्या न किया-गिरजे से गिरजा लड़ा दिया।

उस ओर साधना है ऐसी, इस ओर अशिक्षित औ' अजान;
फावड़ा कुदाली वाले ये-मजदूर और भोले किसान।

आशा करते हैं एक रोज वह अवतारी फिर आवेगा;
आसुरी कृत्य करके समाप्त फिर दुनिया नई बसावेगा।

पर किसे ज्ञात था जग में वह अवतरित हो चुका है ज्ञानी;
जिसके तप-बल से झुके सभी दुनिया के ज्ञानी-विज्ञानी।

वह कौन? एक मुट्ठी-भर का अधनंगा-सा बुढ़ा फकीर;
जिसके माथे पर सत्य तेज, जिसकी आँखों में विश्व-पीर।

जिसकी वाणी में शक्ति, भेद जो कुलिश-कपाटों को जाती;
जिसके अन्तर का प्रेम देख असि-धारा कुंठित हो जाती।

वह गाँधी हम सबका बापू, वह अखिल विश्व का प्यारा है;
वह उनमें ही से एक जिन्होंने आकर विश्व उबारा है।

है बुद्ध सुखी उनमें अपने ही परम धर्म का ज्ञान देख;
है ईसा खुश बलिदान देख, पैगम्बर खुश ईमान देख।

बह चली तोप, गल चले टैंक, बन्दूकें पिघली जाती हैं;
सुनते ही मंत्र अहिंसा का अपने में आप समाती हैं।

पाषाण हृदय जो थे, देखो वे आज पिघलकर मोम हुए;
मैं 'राम' बनूं इस आशय से, 'रावण' के घर में होम हुए।

है यही आदि गाँधी-युग का, जो बापू ने विस्तारा हैं;
है यहीं अंत लोहे के दिन, जिनका विज्ञान सहारा है।

विज्ञानी की है परम सिद्धि, जग को लोहे से भर देना;
है हंसी-खेल तुमको बापू! लोहे को पानी कर देना।

इस तुकबन्दी में सार नहीं, पर पूजा की दो बूंदें लो;
इन बूंदों में छोटा-सा कण उन पावन बूंदों का भर दो।

जो आगा खाँ के महलों में छल-छल करती थीं छलक पड़ीं;
उन दो विभूतियों की स्मृति में बरबस आँखों से ढलक पड़ीं!

***- सुभद्रा कुमारी चौहान** कवियों के बापू पृ. १५५-१५७ से साभार*

सत्याग्रह की फलश्रृति चम्पारण की गाथा

चम्पारण सत्याग्रह गाँधीजी के अहिंसा के साक्षात रुप में सिद्ध हुआ। सत्याग्रह का मूल लक्षण है, अन्याय का सर्वथा विरोध करते हुए अन्यायी के प्रति वैरभाव न रखना। भारत में गाँधीजी के नेतृत्व में सत्याग्रह आंदोलन के अंतर्गत अनेक कार्यक्रम चलाए गये थे। जिनमें प्रमुख रुप से चम्पारण सत्याग्रह है। गाँधीजी ने कहा था कि यह एक ऐसा आंदोलन है जो पूरी तरह सच्चाई पर कायम है और हिंसा का इसमें कोई स्थान नहीं है। यह आंदोलन ने लोगों में और कार्यकर्ताओं में एक नई चेतना का निर्माण किया था। ऐसा कहा जाता है कि सो साल से नील का दाग धोया नहीं जाता था, गाँधीजी ने छह महीनों में धो डाला। उनकी पद्धति रचनात्मक कार्य की थी, उन्होंने लोगो को शिक्षित किया और लोगों में छिपे भय को निकाल ने में सफल रहे। चम्पारण सत्याग्रह की शताब्दी वर्ष के अंतर्गत प्रस्तुत है यह लेख। **– सम्पादक**

महात्मा गाँधी, चम्पारण में – १९१७

१० अप्रैल २०१७ को चम्पारण का सत्याग्रह १०० साल का हो गया है। चम्पारण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का खुलासा करता है। साम्राज्यवाद उत्पीड़न के विरूद्ध लड़ने के लिए गाँधीजी ने एक प्रभावशाली कार्य प्रणाली विकसित किया, उन्होंने इसे सत्याग्रह के नाम से पुकारा। चम्पारण सत्याग्रह के परिणाम ने राजनीतिक स्वतंत्रता की अवधारणा और पहुंच को पुनर्भाषित किया और पूरे ब्रिटिश-भारतीय समीकरण को एक जीवंत मोड़ पर खड़ा कर दिया।

चम्पारण में ब्रिटिश बागान मालिकों ने जमींदारों की भूमिका अपना ली थी और वे न केवल वार्षिक उपज का ७० प्रतिशत भूमि कर वसूल कर रहे थे, बल्कि उन्होंने एक छोटे से मुआवजे के बदले किसानों को हर एक बीघा (२० कट्टे) जमीन के तीन कट्टे में नील की खेती करने के लिए मजबूर किया। उन्होंने कल्पना से बाहर अनेक बहानों के तहत गैर कानूनी उपकर 'अबवाब' भी लागू किया। यह कर विवाह में 'मारवाच', विधवा विवाह में 'सागौरा', दूध, तेल और अनाज की बिक्री में 'बेचाई' के नाम से जाना जाता था। उन्होंने प्रत्येक त्यौहार पर भी कर लागू किया था। अगर किसी बागान मालिक के पैर में पीड़ा हो जाए, तो वह इसके इलाज के लिए भी अपने लोगों पर 'घवही' कर लागू कर देता था।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने ऐसे ४१ गैर कानूनी करों की सूची बनाई थी। जो किसान कर का भुगतान करने या नील की खेती करने में नाकाम रहते थे उन्हें शारीरिक दंड दिया जाता था। फरीदपुर के मजिस्ट्रेट रहे ई. डब्ल्यू. एल.टॉवर ने कहा था 'नील की एक भी ऐसी चेस्ट इंग्लैंड नहीं पहुंची, जिस पर मानव रक्त के दाग न लगे हों, नील की खेती रक्तपात की एक प्रणाली बन गई थी। डर का बोलबाला था। ब्रिटिश बागान मालिक और उनके एजेंट आतंक के पर्याय थे।'

याचिकाओं और सरकार द्वारा नियुक्त समितियों के माध्यम से स्थिति को सुधारने के अनेक प्रयास किये गये, लेकिन कोई राहत नहीं मिली और स्थिति निराशाजनक ही रही। गाँधीजी नील की खेती करने वाले एक किसान राजकुमार शुक्ला के अनुरोध पर चम्पारण का दौरा करने पर सहमत हो गए, ताकि वहां की स्थिति का स्वयं जायजा ले सकें। बागान मालिक, प्रशासन और पुलिस के बीच गठजोड़ के कारण एक आदेश बहुत जल्दी जारी किया गया कि गाँधीजी की उपस्थिति से जिले में जन आक्रोश

चम्पारण, बिहार १९१७

फैल रहा है, इसलिए उन्हें तुरंत जिला छोड़ना होगा या फिर दंडात्मक कार्रवाई का सामना करना होगा।

गाँधीजी ने न केवल सरकार और जनता को इस आदेश की अवज्ञा करने की घोषणा करते हुए चौंका दिया, बल्कि यह इच्छा भी जाहिर की कि जब तक जनता चाहेगी वे चम्पारण में ही अपना घर बना कर रहेंगे। मोतिहारी जिला अदालत में मजिस्ट्रेट के सामने गाँधीजी ने जो बयान दिया, उससे सरकार चकित हुई और जनता उत्साहित हुई थी। गाँधीजी ने कहा था कि 'कानून का पालन करने वाले एक नागरिक के नाते मेरी पहली यह प्रवृत्ति होगी कि मैं दिए गए आदेश का पालन करूं, लेकिन मैं जिनके लिए यहां आया हूं, उनके प्रति अपने कर्तव्य की हिंसा किये बिना मैं ऐसा नहीं कर सकता। आप मुझे जो सजा देना चाहते हैं, उसे कम कराने की भावना से मैं यह बयान नहीं दे रहा हूं। मुझे तो यही जता देना है कि आज्ञा का अनादर करने में मेरा उद्देश्य कानून द्वारा स्थापित सरकार का अपमान करना नहीं है, बल्कि मेरा हृदय जिस अधिक बड़े कानून को अर्थात् अन्तरात्मा की आवाज को स्वीकार करता है, उसका अनुसरण करना ही मेरा उद्देश्य है। यह समाचार जंगल की आग की तरह फैल गया और अदालत के सामने अभूतपूर्व भीड़ इकट्ठी हो गई। बाद में गाँधीजी ने इसके बारे में लिखा कि किसानों के साथ इस बैठक में मैं ईश्वर, अहिंसा और सत्य के प्रति आमने-सामने खड़ा था।'

अत्यंत विनम्रता, पारदर्शिता और दृढ़ता से लोगों ने देखा कि उन्हें गाँधी के रूप में एक उद्धारक मिल गया है। मजिस्ट्रेट ने मामले को खारिज कर दिया और कहा कि गाँधीजी चम्पारण के गाँवों में जाने के लिए आजाद हैं। यह घटना से प्रभावित हो कर सी. एफ. एंड्रयूज नामक एक अंग्रेज, जिन्हें लोग प्यार से 'दीनबंधु' कहते थे, गाँधीजी की सहायता के लिए पहुंचे। पटना के बुद्धिजीवी बाबू ब्रज किशोर प्रसाद, बैरिस्टर मज़रुल हक, बाबू राजेंद्र प्रसाद तथा प्रोफेसर जे. बी. कृपलानी के नेतृत्व में युवाओं की अप्रत्याशित भीड़ के साथ गाँधीजी की सहायता के लिए उनके चारों ओर इकट्ठे हो गए।

गाँव की दयनीय हालत देखकर गाँधीजी ने स्वयंसेवकों की सहायता से छह ग्रामीण स्कूल, ग्रामीण स्वास्थ्य केन्द्र, ग्रामीण स्वच्छता के लिए अभियान और नैतिक जीवन के लिए सामाजिक शिक्षा की शुरूआत की। देश भर के स्वयंसेवकों ने सौंपे जाने वाले कार्यों के लिए अपना नामांकन कराया। इन स्वंयसेवकों में भारत सेवक समाज के डॉ. देव भी थे। पटना के स्वयसेवकों ने आत्म निर्धारित श्रेष्ठता का परित्याग करके एक साथ रहना, साधारण भोजन खाना और किसानों के साथ भाई-चारे का व्यवहार करना शुरू कर दिया। उन्होंने खाना बनाना और बर्तन साफ करना भी शुरू कर दिया। पहली बार किसान अन्यायी प्लांटरों से परेशान होकर निडर रूप से अपनी परेशानियां दर्ज करवाने के लिए आगे आए। व्यवस्थित जांच मामले के तर्कसंगत अध्ययन और सभी पक्षों के मामले की शांतिपूर्ण सुनवाई, जिसमें ब्रिटिश प्लांटर्स भी शामिल थे तथा न्याय के लिए आह्वान के कारण सरकार ने एक जांच समिति का गठन करने के आदेश दिए। इस कमेटी में गाँधीजी भी एक सदस्य थे, जिन्होंने आखिर में चम्पारण से तीन कठिया प्रणाली के पूर्ण उन्मूलन की अगवाई की।

चम्पारण से सबक – चम्पारण से नई जागृति आई और इसने यह दर्शाया है कि:

- कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि उसकी अन्यायपूर्ण व्यवस्था हमारी दुश्मन है।
- क्रोध और घृणा की स्थिति में भी अहिंसा निडरता से रास्ता दिखाती है।
- अन्यायपूर्ण कानून के साथ सभ्यता पूर्ण असहयोग और अपेक्षित दंड को प्रस्तुत करने तथा सच्चाई के अनुपालन की इच्छा ऐसे बल का सृजन करती है, जो किसी सत्तावादी ताकत को निस्तेज करने के लिए पर्याप्त है।
- निडरता, आत्मनिर्भरता और श्रम की गरिमा स्वतंत्रता का मूल तत्व है
- यहां तक कि शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति भी चरित्र बल पर ताकतवर बनकर विरोधियों को परास्त कर सकता है।
- स्वतंत्रता केवल राजनीतिक उत्पीड़न से बचने के लिए ही नहीं होती है। इसका ध्येय सभी चंगुल से मुक्ति पाना है; गरीबी से, निरक्षरता से, खराब स्वास्थ्य से और स्वच्छता की कमी से, उसके बाद जो प्राप्त होगा वह असली स्वराज होगा।

चम्पारण सत्याग्रह के बारे में बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने लिखा है कि 'राष्ट्र ने अपना पहला पाठ सीखा और सत्याग्रह का पहला आधुनिक उदाहरण प्राप्त किया।'

ब्रिटिश सरकार द्वारा गैरलाभकारी नील की फसल उगाने के लिये बाध्य किये जाने पर चम्पारण का एक किसान अपने जीर्ण-शीर्ण झोपडी में भुखमरी की स्थिति में गाँधीजी को अपनी व्यथा सुनाता हुआ। – खोज गाँधीजी की संग्रहालय का चम्पारण सत्याग्रह खण्ड का दृश्य

चम्पारण सत्याग्रह प्रमुख घटनाएं

जुलाई: बिहार सरकार ने विज्ञप्ति निकालकर सूचना दी कि जाँच-कार्य जुलाई के मध्य से आरम्भ होगा।

जुलाई ७: पटना से गाँधीजी ने वाइसरॉय के निजी सचिव को पत्र लिखा जिसमें श्रीमती बेसेंट की नजरबन्दी को भयंकर भूल बताया।

जुलाई ९: राजा हरिहरप्रसाद सिंह द्वारा अस्वस्थता के कारण त्याग पत्र देने पर उनके स्थानपर राजा कीर्त्यानन्द सिंह चम्पारण जाँच-समिति के सदस्य नामजद किये गये।

जुलाई ११: चम्पारण जाँच-समिति ने अपनी विधि और जाँच के विषय निर्धारित करने के लिए आरम्भिक बैठक की।

जुलाई १२: हाउस ऑफ कॉमन्स सभा में ई.एस.मॉंटेग्यु ने भारत सरकार के वर्तमान गठन की कड़ी आलोचना की।

जुलाई १३: गाँधीजी ने एक निजी परिपत्र में सत्याग्रह आश्रम की गतिविधियों और खर्चे का ब्यौरा बताते हुए सहायता की अपील की।

जुलाई १७: ई.एस.मॉंटेग्यु भारत मन्त्री नियुक्त हुए। चम्पारण जाँच-समिति की बैठक बेतिया में आरम्भ हुई।

जुलाई १९: चम्पारण जाँच समिति की बैठक बेतिया में हुई।

जुलाई २५: बिहार बागान-मालिक संघ ने चम्पारण जाँच-समिति को एक लिखित वक्तव्य दिया।

जुलाई २६: चम्पारण जाँच-समिति की बैठक मोतीहारी मे हुई, जिसमें मोतीहारी लिमिटेड कम्पनी के प्रबन्धक डब्ल्यू. एस. इर्विन ने बयान दिया।

जुलाई २८: कांग्रेस-लीग सुधार परिषद की बम्बई में संयुक्त बैठक।

जुलाई २९: गाँधीजी ने शरहबेशी के बारे में एक गोपनीय टिप्पणी जाँच समिति के सदस्यों के विचारार्थ तैयार की।

अगस्त ८: चम्पारण जाँच-समिति की बैठक बेतिया में हुई। अबवाब-सम्बन्धी गाँधीजी का सुझाव मान लिया गया।

अगस्त १०: जाँच समिति ने तिन-कठिया प्रथा समाप्त करना स्वीकार कर लिया।

अगस्त ११: गाँधीजी ने शरहबेशी के सवाल पर समिति की बैठक में चर्चा की, और अपने प्रस्ताव प्रस्तुत किये।

अगस्त १२: जाँच समिति ने बागान-मालिकों के साथ परामर्श किया और सर्वसम्मति से तिन-कठिया प्रथा के स्थान पर खुश्की-प्रथा लागू करने का निश्चय किया।

अगस्त १३: गाँधीजी ने चम्पारण जाँच समिति के अध्यक्ष को शरहबेशी और तिन-कठीया के बारे में पत्र लिखकर बागान-मालिकों के साथ समझौते की अपनी शर्तें बताई।

अगस्त १४: समिति गाँधीजी के सुझावों पर विचार करने के बाद स्थगित हो गई।

अगस्त १५: गाँधीजी ने पीपरा नील कारखाने के प्रबन्धक से रैयत के मारे-पीटे जाने की शिकायत की।

अगस्त १६: बेतिया और मोतीहारी में सेवा कार्य जारी रखने के लिए स्वयंसेवकों के शिविर स्थापित करके गाँधीजी अहमदाबाद जाते हुए पटना पहुँचे।

अगस्त २०: कॉमन्स सभा में ई.एस.मॉंटेग्यु ने प्रशासन के प्रत्येक क्षेत्र में भारतीयों को उत्तरोत्तर अधिकाधिक स्थान देने की ब्रिटिश सरकार की नीति घोषित की।

अगस्त ३१: महादेव देसाई को अपने साथ काम करने का निमन्त्रण दिया।

सितम्बर २: सरकार के दमनकारी कानूनों के विरुद्ध सत्याग्रह आन्दोलन चलाने के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए बम्बई प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई; इसमें गाँधीजी ने भाग लिया।

सितम्बर १३: से पूर्वः गुजरात सभा की ओर से भारत मन्त्री मॉंटेग्यु को देने के लिए एक याचिका तैयार की।

सितम्बर २२: गाँधीजी रांची पहुँचे।

सितम्बर २३: रांची में लेफ्टिनेंट गवर्नर से अपनी भेंट में गाँधीजी ने शरहबेशी और चम्पारण में स्वयंसेवकों के काम के विषय में बातचीत की।

सितम्बर २४-२८: चम्पारण जाँच-समिति की रांची में होनेवाली अन्तिम बैठक में गाँधीजी ने भाग लिया।

सितम्बर २५: गाँधीजी ने तीसरे दर्जे की रेलयात्रा के बारे में अखबारों में एक पत्र लिखा।

सितम्बर २७: भारत साम्राज्य के अन्दर रहकर स्वशासन क्यों चाहता हैं। शीर्षक से लिखी गई नटेसन की पुस्तिका के लिए गाँधीजी ने भूमिका लिखी।

सितम्बर २९: शरहबेशी में कमी करने के बारे में प्रमुख बागान-मालिकों के साथ होनेवाले समझौतेपर गाँधीजी ने हस्ताक्षर किये।

अक्तूबर ३: चम्पारण जाँच-समिति के अन्य सदस्यों के साथ गाँधीजी ने रिपोर्ट पर हस्ताक्षर किये।

अक्तूबर ४: गाँधीजी ने समिति की रिपोर्ट पर सरकार के निर्णय को क्षेत्रीय भाषा में प्रकाशित करने का सुझाव देते हुए लेफ्टिनेंट गवर्नर को पत्र लिखा।

अक्तूबर ५: रांची से पटना पहुँचे, और वहाँ से कांग्रेस कमेटी की बैठक में भाग लेने के लिए इलाहाबाद रवाना हुए।

अक्तूबर ६: अ.भा. कांग्रेस कमेटी और अ. भा. मुस्लिम लीग की परिषद की संयुक्त बैठक इलाहाबाद में हुई जिसमें कांग्रेस लीग योजना का समर्थन करने के लिए एक अखिल भारतीय शिष्ट मण्डल वाइसरॉय और भारत-मन्त्री के पास भेजने का निश्चय किया गया। चम्पारण जाँच-समिति की रिपोर्ट को सपरिषद लेफ्टिनेंट गवर्नर ने स्वीकार कर लिया।

अक्तूबर ९: गाँधीजी ने बेतिया में गोशाला की नींव रखी।

अक्तूबर १५: भागलपूर में बिहार छात्र सम्मेलन की अध्यक्षता की।

अक्तूबर १८: बिहार और उड़ीसा सरकार ने चम्पारण खेती-बारी जाँच समिति पर प्रस्ताव पास किया जिसमें कृषकों के प्रतिनिधि गाँधीजी की समझ और संयम की प्रशंसा की गई।

नवम्बर ११: मुजफ्फरपुर धर्मशाला, बिहार में आयोजित सार्वजनिक सभा में भाषण; कांग्रेस लीग सुझावों का समर्थन करने की अपील की; शाम को हिन्दू और मुसलमान नेताओं के सम्मेलन में भाग लिया।

नवम्बर १२: उमरेठ में गोखले पुस्तकालय का उद्घाटन। बिहार बागान मालिक संघ के मंत्री जे. एम. विल्सन ने 'स्टेट्समैन' में बागान मालिकों के कानूनी सलाहकार की राय प्रकाशित की।

नवम्बर १४: डाका, चम्पारण के समीप बरहरवा में गाँधीजी ने स्कूल का उद्घाटन किया।

– सम्पूर्ण गाँधी वाड्मय, खण्ड १३,१४

लाल नील

भारतीय स्वतंत्र संग्राम का इतिहास विश्व के लिए प्रेरणा का इतिहास रहा है। शायद ही ऐसा कोई देश होगा जिन्होंने अहिंसा के तत्व के आधार पर स्वतंत्रता प्राप्त किया हो। गाँधीजी की पद्धति अद्वितीय थी, रचनात्मक कार्य के माध्यम से उन्होंने व्यक्ति को खड़ा करने का प्रयास किया, भारत में इनकी शुरूआत चम्पारण से हुई। अंग्रेजों के द्वारा किये गये दमनकारी कानूनों के खिलाफ सत्याग्रह का अमोध हथियार ने चम्पारण की रैयत में अद्भुत जागृति का संचार किया। किसान नीलहरों का त्रास भूल गये और निर्भय होकर गाँधीजी को अपनी दुख गाथा सुनाने लगे। सत्याग्रह के संघर्ष का हेतु लोगों के अन्दर से कायरता निकालकर पौरुष भरना और सच्चे मनुष्यत्व को विकसित करना है। चम्पारण सत्याग्रह ने यह दृढ़ रुप से सार्थक कर दिखाया। – **सम्पादक**

नील और चम्पारण

१७७७ ई. में सर्वप्रथम लुई बन्नों नामक एक फ्रांसिसी ने बंगाल सूबे में नील की खेती की शुरूआत की थी। १७७७ के पूर्व अंग्रेज और फ्रांसिसी व्यापारी भारत से नील ले जाकर दूसरे देशों को बेचते थे। लेकिन नील की खेती में पूंजी लगाने की चेष्टा अठारहवीं शताब्दी के अंतिम चरण में ही की गयी। लुई बन्नों के कार्य से प्रोत्साहित तथा नील के व्यवहार में भारी मुनाफे को देखते हुए कैरल ब्लूम नामक एक अंग्रेज व्यापारी ने १७७८ ई. में सर्व प्रथम नील की कोठी खोली तथा ईस्ट इण्डिया कम्पनी को सूचित किया कि नील की खेती बड़े मुनाफे का साधन बन सकती है। कैरल ब्लूम ने तत्कालीन गवर्नर जनरल को भी एक स्मृति पत्र भेजा, जिसमें बड़े पैमाने पर नील की खेती करने का अनुरोध किया गया।

बिहार में नील उद्योग को प्रारंभ करने का श्रेय तिरहुत व दरभंगा के कलक्टर फ्रैंकॉस (१७८२-१७८५) को जाता है। भारत तथा भारत के बाहर १८ वीं शताब्दी में नील की माँग बहुत थी। उन्नीसवीं सदी में ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति हुई जिसके परिणामस्वरूप अन्य वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि के साथ कपड़ों के उत्पादन में लगभग १० से १२ गुना की वृद्धि हुई। इससे कपड़ों में दी जाने वाली नील की मात्रा बढ़ी और मात्रा के बढ़ने से नील की माँग बढ़ी। ब्रिटेन के अलावा भारतीय नील इटली, फ्रांस, अमरीका, आस्ट्रेलिया, मिस्र तथा फारस आदि देशों में भेजी जाती थी। नील की माँग से भारी मुनाफे को ध्यान में रखकर कम्पनी ने निलहे साहेबों को जन्म दिया, जो अपने शोषण और अत्याचार के लिए चम्पारण ही नहीं सम्पूर्ण भारतीय इतिहास को कलंकित किया।

नील की खेती की तीन कठिया जोत-प्रथा

चम्पारण में तीन कठिया प्रथा का प्रचलन सबसे अधिक था। इस प्रथा के अन्तर्गत कोठीवाले रैयतों से उनकी एक निश्चित भूमि पर नील की खेती करवाते थे तथा बदले में एक निश्चित रकम उन्हें देते थे। १८६० ई. तक एक बीधा जमीन में ५ कट्ठा नील की खेती के लिए भूमि निश्चित की जाती थी, परन्तु १८६७ ई. के आस पास ५ कट्ठे भूमि के स्थान पर एक बीघे में तीन कट्ठे भूमि पर नील की खेती की जाने लगी। तभी से इस प्रथा का नाम तीन कठिया पड़ा।

चम्पारण सत्याग्रह और राजकुमार शुक्ल का प्रयास

राजकुमार शुक्ल ने महात्मा गाँधी को चम्पारण लाने तथा निलहों के विरुद्ध रैयतों की मुक्ति दिलाने के जाँच कार्य में महात्मा गाँधी को सहयोग देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। आरम्भ से ही राजकुमार शुक्ल नीलवरों से नाखुश थे। एक बार उन्होंने अपने कोले में आलू की खेती की। आलू की फसल तैयार हो जाने पर बेलवा कोठी के दरिन्दों ने आधी फसल राजकुमार शुक्ल से कोठी को दे देने के लिए कहा तो इन्होंने कहा कि घर और कीले की लगान सरकार की तरफ से माफ है। अतः किले की उपज पर मेरा पूरा अधिकार क्यों नहीं। बेलवा कोठी के मैनेजर ने यह जानकर कि अन्य किसान भी देखा-देखी में बागी हो जायेंगे, इसलिए कारिन्दों को लेकर राजकुमार शुल्क के पास गया। शुक्ल जी को डराया, धमकाया गया, परन्तु जब वे विचलित नहीं हुए तो इनके घर का सारा सामान नष्ट कर झोपड़ी उजाड़ दी गयी। इसी समय उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक निलही कोठी के गोरे साहबों के अत्याचारों से चम्पारण के किसानों को मुक्त नहीं कर लूंगा, चैन की सांस नहीं लूंगा। इसी समय वे गाँवों में घुमघुमकर गुप्त सभाओं द्वारा निलही कोठी के गोरों के खिलाफ प्रचार करते और उदासीन ग्रामवासियों को एक जुट होकर अत्याचार के विरुद्ध सर उठाने के लिए ललकारने लगे। राजकुमार शुक्लजी का यह प्रय़ास छिपा न रहा। मैनेजर ने चिढ़कर शुक्लजी के विरुद्ध एक मुकदमा दायर कर दिया कि

नील की खेती करनेवाले किसान

इन्होंने खेत में मछलियाँ पकड़ी हैं। उस समय अपने खेत में भी मछली पकड़ना अपराध माना जाता था। शुक्लजी को तीन सप्ताह की जेल हुई। जेल से निकलने के पश्चात वे और जोर से निलहों के विरुद्ध कार्य करने लगे। पटना के किसी समाचार पत्र ने उनके लेख को नहीं छापा तो वे कानपुर में गणेश शंकर विद्यार्थी से मिले और विद्यार्थीजी ने प्रताप समाचार पत्र में उनका लेख चम्पारण की दुर्दशा छापा और आगे भी छपवाने का वचन दिया।

राजकुमार शुक्ल द्वारा चम्पारण के अत्याचारी निलहों के खिलाफ अभियान के दौरान उन्हें आभास हुआ कि जिस काम को समाप्त करने का बीड़ा उन्होंने उठाया है, वह किसी असाधारण पुरुष की सहायता के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह की चर्चा के साथ उन्होंने गाँधीजी का नाम सुन रखा था।

हालांकि चम्पारण के नीलवरों और उनके रैयतों के सम्बन्ध की जाँच के विषय में अपनी बात उपस्थित करने से पूर्व ही राजकुमार शुक्ल लोकमान्य तिलक के पास गये और चम्पारण के किसानों के दुःख को दूर करने की प्रार्थना की। परन्तु उन्होंने देश की राजनीतिक स्वतंत्रता के प्रश्न को प्रमुखता प्रदान कर इसे बाद में देखने की बात कही। इसके पश्चात राजकुमार शुक्ल पं. मदन मोहन मालवीयजी के पास गये। लोकमान्य की ही भाँति उन्होंने भी चम्पारण की समस्या को गौण और भारत की स्वतंत्रता के लिए जाने वाले कार्य को प्रमुखता दी। महात्मा गाँधी विभिन्न प्रान्तों से आये प्रतिनिधियों के कैम्प के बगल में ठहरे थे। राजकुमार शुक्ल उनके पास गये। गाँधीजी की सौम्यता व सादगी से प्रभावित हो, आँख में आँसू भर राजकुमार शुक्ल उनके चरणों पर लेट गये और भरे गले से उन्होंने कहा निलहों के जुल्म से चम्पारण के रैयतों को बचाइये।

अंग्रेजों द्वारा भारतीय कृषि व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन किये जाने से देश के कृषि जगत में हलचल पैदा हो गयी तथा भारतीय कृषक निर्धनता की बेड़ियों से जकड़ गये। चम्पारण उनका ही एक उदाहरण है। चम्पारण में उत्पन्न होनेवाली नील सदियों से किसानों के रक्त का लाल दाग रही है। गाँधीजी की सत्याग्रह पद्धति न केवल उनके बंधनों को तोडने में सार्थक हुई बल्कि पूर्ण स्वराज्य की और ठोस कदम बढाने में भी कारगर सिद्ध हुई।

गाँधीजी की पद्धति

गाँधीजी कहते हैं 'मेरे पास दूसरा कोई साधन नहीं है। बस, एक ही रास्ता है सत्याग्रह। अब तक मैंने सत्याग्रह का भीषण स्वरूप देश के सामने उपस्थित किया है; इसमें सहयोगी, असहयोगी, कट्टर, हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई, यहूदी सब शामिल हो सकते हैं।'[१] सत्याग्रह केवल सरकार के विरुद्ध ही नहीं किया जा सकता, वह किसी भी अनीतिपूर्ण स्थिति में किसी के भी विरुद्ध किया जा सकता है। अतएव इसके उदाहरण के तहत हम देखते हैं तो चम्पारण में अनीति आधारित व्यवस्था के खिलाफ सत्याग्रह चलाया, अहमदाबाद में धनिकों के विरुद्ध सत्याग्रह चलाया और खेड़ा में सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह चलाया। 'सत्याग्रह के लिए दोनों पक्षों का सत्याग्रही होना जरूरी नहीं है। यदि एक पक्ष सत्याग्रही बना रहे तो अन्त में विजय सत्याग्रह की ही होती है।'[२] युद्ध कि स्थिति दोनों पक्षों के लिए आंसू सारने जैसी स्थिति होती है। उसमें हारने वाला तो रोता ही है किन्तु जीतने वाला भी रोता है। इस दृष्टि से देखा जाये तो युद्ध कि स्थिति सुखकर नहीं है। किन्तु सत्याग्रह इससे विपरीत है, इस स्थिति में जीत किसी पक्ष की नहीं किन्तु सत्य की होती है। और सत्य की जीत किसी के लिए पीडादायक नहीं होती। कष्ट सहन की लड़ाई में जितना कष्ट सहना पडे उतना शुद्ध होते है।

पर अफसोस, एक शतक तक, बंधुआ का अभिशाप किसानों के जीवन को अंधकारमय बनाकर उनका गला घोटता रहा। वे अपने स्वयं से विमुख हो गये थे, क्योंकि कृषि पूंजीगत और बाजार द्वारा संचालित हो रही थी। और यह पद्धति पारंपरिक पद्धति से खेती करने वाले तथा सीमांत किसान के लिए बिलकुल नई व पश्चिमी ढंग की थी। गाँधीजी ने देश के केंद्र के रूप में गाँवों को स्थान दिया, क्योंकि गाँव ही तो राष्ट्र को महत्वपूर्ण अन्न प्रदान करता है। किसानों की आजादी की यात्रा को सिद्ध करने के लिए उन्होंने सो साल पहले चम्पारण में रचनात्मक कार्य की शुरूआत की थी। उनके द्वारा किए गये प्रयास हमारे लिए एक प्रेरणा की मिसाल बना।

लेकिन यह हम पर निर्भर करता है कि किसान और कृषि से सम्बन्धित किसी भी तरह की अशांति अब नहीं फैलनी चाहिए। देश में कृषि सम्बन्धित कई अनुसंधान हो रहे है, लोगों में सामाजिक जागृति का संचार हो रहा है। इसलिए अब सीमांत किसानों के स्तर पर भी हम कृषि को टिकाऊ बना सकते है। इसके लिए प्रत्येक गाँव में कृषि से सम्बन्धित बुनियादी ढांचे का निर्माण और सरलता से प्राप्त आर्थिक स्रोत, तकनीक, बाजार के साथ सरल संपर्क, न्यूनतम मूल्य की नीति, फसल बीमा, किसानों के लिए पेंशन योजना जैसे प्रावधानों की मौजूदगी होना अनिवार्य है।

दुनिया को हमारे किसानों के संदर्भ में असीम कष्ट के पर्याय में लाल (रक्त) का प्रयोग नहीं होना चाहिए। और यह केवल कृषि में निष्पक्ष और अर्थव्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव के संदर्भ में तो हरगिज नहीं।

अगर ऐसा कर पाते तो यही राष्ट्रपिता को उचित समर्पण होगा।

सन्दर्भ –

१) हिन्दी नवजीवन, ७-९-१९२४; २) सत्याग्रह, प्रधान सम्पादक श्रीरामनाथ सुमन; ३) चम्पारण में महात्मा गाँधी, डॉ. राजेंद्र प्रसाद; ४) चम्पारण में बापू ब्रिजकिशोर सिंह; ५) सम्पूर्ण गाँधी वाड्मय खंड १३-१४

चम्पारण...

कहो, किसने था भय को भगाया?
किसान तेरे भय को था किसने भगाया?
सवा शब्तादी की दुष्ट परंपरा को दुम ही दबाकर भगाया!
उत्तर बिहार में चम्पारण जाते ही किसने जनता को जगाया?
कृषकों के माथे – तिनकठिया थोप कर
लाखों का जीवन उजाडा
पूरी बारीकी से सुनकर शिकायतों को
अन्यायी तंत्र को हटाया।। किसान तेरे...
कोडों की मार और छडियों के चिन्हों की यादों को पूरा मिटाया।।
आत्मा की शक्ति को किसने पहचान कर
भीतर की आँख को जगाया।। किसान तेरे...
भीतर प्रकाश हुआ अंदर विश्वास जगा,
कृषकों की नींद को उडाया।
बापू ने भारत की सोयी-सी जनता को अंगडाई ले कर जगाया।।
किसान तेरे...

– गाँधी कथा...गीत
श्री नारायण देसाई, पृष्ठ क्र. ३५ से साभार

आज की समाज रचना

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक स्व. डॉ. भवरलालजी जैन एक गम्भीर लेखक एवं चिंतक थे। हमनें आपकी मराठी कृति 'आज की समाज रचना' से 'उत्तरदायी कौन? व्यक्ति या संस्था' विषयक प्रस्तुत है यह महत्त्वपूर्ण लेख का शेष अंश। **- सम्पादक**

इसके विपरीत हमारी आधारभूत संस्थाएँ, विभाग अधिकांशत: शिथिल और निष्प्रभावी हो चुके हैं। उनको सम्मान देने की बात तो दूर उनकी देखभाल करना भी अधिकांश लोग आवश्यक नहीं मानते हैं। प्रशासनिक कार्यों में हो रहे हस्तक्षेप के कारण कानून-व्यवस्था एवं अन्य संस्थाओं के प्रति आवश्यक भय भी समाप्त हो चुका है। यहाँ समाज के स्वरूप एवं रचना में अपराधी को सजा एवं निरपराधी को समर्थन मिलेगा, ऐसा नहीं कहा जा सकता। अधिकांशतः संभावना इस बात की होती है कि अपराध कोई और करता है, दंड किसी और को मिल जाता है। जिसके कारण आम आदमी का सरकार एवं अन्य संस्थाओं से विश्वास समाप्त हो गया है। कई बार तो ऐसा आभास होने लगता है कि अपने देश में कानून का राज्य है, या नहीं है।

विभूतिपूजा भारतीय स्वभाव का महत्त्वपूर्ण अंग है। यद्यपि यह संस्था प्रबल नहीं है, फिर भी उसके नियामक चरित्रवान, प्रभावशाली और ओजस्वी हो तो समाज में उसके कंधें से कंधा मिलाकर खड़े होने का उदाहरण प्राप्त होता हैं। एक आम धारणा है कि आदमी श्रेष्ठ हो तो सरकार की व्यवस्था बुरी हो ही नहीं सकती है। अच्छे आदमी के नेतृत्व में दोषपूर्ण विभाग और संस्थाएँ भी अच्छी तरह से काम कर सकती हैं। किंतु आज की सामाजिक व्यवस्था में नेता कैसा होना चाहिए है, इसी पुस्तक में इसका चित्रण अन्यत्र किया गया है । एक ओर मृतप्राय संस्थाएँ, दूसरी ओर अपने स्वार्थ में अंधे राजनेता, तीसरी ओर अकर्मण्य, उदासीन अधिकारी और चौथी ओर आदर्श प्रणेता या प्रेरक का अभाव सर्वत्र दिखाई देता है। इन सबके कारण व्यक्ति, समाज, अर्थव्यवस्था, परोक्ष रूप में देश, दिशाहीन स्थिति में विचरण करता दिखाई देता है। अधिकांश लोगों को ऐसा लगता है कि इस प्रकार का व्यवहार नहीं करना चाहिए। परन्तु ऐसा लगता है कि कहने वाले भी परिस्थितिवश वैसा ही व्यवहार करते हैं, वैसे ही बन जाते या बनाए जाते हैं। अन्ततः उनकी प्रवृत्ति भी वैसी ही बन जाती है। आज हमारे समाज का स्वरूप परिस्थितिजन्य हो गया है, जो हमारी आधारभूत संस्थाओं के लिए प्रतिमा स्वरूप है। यह समाज में आदर्श के अभाव का सूचक है। हमारी सदोष समाज-रचना की नींव पर हमारी आधारभूत संस्थाएँ खड़ी हैं। वह नींव, हमारे संविधान की दयनीय स्थिति, पाश्चात्य संस्कृति अंधानुकरण आदि प्रवृत्तियाँ अपने तेजस्वी इतिहास एवं संस्कृति के विस्मरण के लिए उत्तरदायी हैं।

इस परिस्थिति के कारणों पर विचार किया जाता है तो समाज-रचना और उसके स्वरूप में जो हृदय विदारक परिवर्तन हुआ है उसका कारण आम आदमी के चरित्र का अध:पतन है। इस संदर्भ में आदमी सुधरेगा तो समाज सुधरेगा और समाज सुधरेगा तो देश सुधरेगा; ऐसा तर्क दिया जाता है। व्यक्तिगत स्तर पर हर आदमी अपना काम ठीक ढंग, ईमानदारी और न्याय की भावना से करे तो कार्यशील संस्थाएँ स्वयं सुधर जाएँगी और सुचारू रूप से कार्य करने लगेंगी। इसीलिए आधारभूत संस्थाओं में परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है, ऐसे विचार भी प्रकट किये जाते हैं। यदि वास्तव में समाज रचना के इस गहन और पेचीदा प्रश्न हल करना है तो इतना सा सामान्य उपाय उसे हल करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

डॉ. भवरलालजी जैन

केवल व्यक्ति का चरित्र ही संस्था व समाज के कार्यों का आधार नहीं बन सकता है। जबकि समाज व्यक्तियों से ही बनता है और कुछ समय पश्चात उसके कार्यकलापों से उसे कालानुरूप और अनूठा अस्तित्व प्राप्त होता है। इसलिए व्यक्तियों का समुदाय याने समाज का ऐसा समीकरण प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है। इसके साथ ही व्यक्ति के चरित्र में परिवर्तन करना इतना सरल भी नहीं है। अत्यन्त शीघ्रता से परिवर्तित होते समय और उसी अनुरूप जनसंख्या की अतिशय वृद्धि को देखें तो एक-दो या पाँच-पचास लोगों के अच्छा बन जाने से काम बनने वाला नहीं है। उसके लिए समाज की नियामक एवं कार्यकारी संस्थाओं का सबल होना आवश्यक है। इन प्रवृत्तियों का क्षय करना हो तो उपर्युक्त संस्थाओं के विभागों के आधारभूत ढाँचों, कार्यपद्धतियों में समयोचित आमूलचूल परिवर्तन करना अपेक्षित है। केवल व्यक्ति के चरित्र में सुधार करने से यह संभव नहीं होगा।

कानून कैसा भी हो, लोग यदि अच्छे हों, या इसके विपरीत लोग कैसे भी हों; केवल कानून अच्छा हों तो सब कुछ ठीक हो जाएगा, ऐसा दावा कोई करे तो वह गलत ही सिद्ध होगा। यही सिद्धांत सरकार, शासकीय संस्थाओं पर प्रभावी होता है। इसलिए व्यक्तियों के कारण संस्थाएँ बिगड़ी या संस्थाओं के कारण व्यक्ति बिगड़े, समाज बिगड़ा यह बहस अनावश्यक लगती है। केवल आदमी सुधरा तो समाज सुधरेगा या संस्थाएँ सुधर गईं तो समाज सुधरेगा, ये दोनों विचार एकतरफा मालूम होता हैं। विगत ६२ वर्षों में संस्थाओं में विकृतियाँ एवं त्रुटियाँ उपजी हैं। इनसे समाज एवं व्यवसायों में विविध अपप्रवृत्तियों का उदय हुआ, यह तर्क अधिक युक्तिसंगत लगता है। व्यक्ति और संस्था में से किसी एक को ही उत्तरदायी ठहराना हो तो संस्थाओं के संदर्भ में ऐसा सिद्धांत सामान्यत: स्थूल रूप से सामने रखा जाना अनुचित प्रतीत होता है। वैसे देखें तो व्यक्ति, समाज और देश की संकल्पनाएँ एक-दूसरे की विरोधक नहीं अपितु परस्पर पूरक रहीं है। एक का पतन या सुधार स्वभावतः एक-दूसरे के लिए मारक या तारक सिद्ध हो सकता है। व्यक्ति सुधरे तो शायद समाज भी सुधरे। किंतु देश को बलशाली, प्रभावी या गतिमान बनाना हो तो उसके लिए निर्दोष, सबल, सशत्र और जागरूक प्रशासनिक और सामाजिक संस्थाओं की श्रृंखला का निर्माण अनिवार्य है। बेंजामिन डिजरेली के कथनानुसार, व्यक्ति-व्यक्ति के मिलने से शायद समाज बनते हों। पर वे केवल संस्थाएँ ही हैं जो राष्ट्र का निर्माण कर सकती हैं। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि भ्रष्ट संस्थाएँ देश को छिन्न-भिन्न या नष्ट भी कर सकती हैं।

क्रमश:

फाउण्डेशन की गतिविधियाँ

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन बहुआयामी गतिविधियों के माध्यम से गाँधीजी के जीवन मूल्यों को व्यक्ति और समाज में स्थापित करने हेतु सदा प्रयत्नशील रहा है। संस्था का मूल उद्देश्य ही सत्य, अहिंसा, शांति, आपसी सहयोग की भावना का वैश्विक स्तर पर विकास करना है। फाउण्डेशन द्वारा ग्राम समुदाय के शाश्वत विकास की दिशा में आगे बढ़ने हेतु बहुविध कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं प्रस्तुत है एक रिपोर्ट **– सम्पादक**

फाउण्डेशन द्वारा गाँधी साहित्य का वितरण

आइ.एफ.एन.आर (इन्डियन फेडरेशन ऑफ न्यूरो रिहेबिलीटेशन) का वार्षिक सम्मेलन ३१ मार्च से २ अप्रैल २०१७ तक मुंबई में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में उपस्थित सभी छात्र एवं अतिथियों को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के द्वारा गाँधीजी की आत्मकथा एवं हिन्द स्वराज किताब प्रदान की गई।

आइ.एफ.एन.आर के अध्यक्ष डॉ. निर्मल सूर्यजी तथा यू.के. स्थित सुप्रसिद्ध न्यूरो साइकोलॉजिस्ट डॉ. नरिन्द्र कपूर ने इस सम्मेलन के लिये गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक अनिल जैन को गाँधी साहित्य प्रदान करने के लिए प्रस्ताव किया था।

प्रस्तुत कार्यक्रम में श्रीमान कपूर के द्वारा उपस्थित छात्रों को छात्रवृति तथा फाउण्डेशन द्वारा गाँधीजी की किताबों से सम्मानित किया गया। इस सम्मेलन में पिछले दो साल से गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा गाँधी साहित्य प्रदान किया गया है। ♦♦♦

'गाँधी विचार संस्कार परीक्षा' के लिये कायिक निधि निर्माण करने का प्रयास

वर्ष २००७ से फाउण्डेशन ने 'गाँधी विचार संस्कार परीक्षा' (GVSP) नामक एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम कार्यान्वित किया है। शाश्वत जीवन मूल्यों की अनौपचारिक शिक्षा देनेवाला यह कार्यक्रम देश भर के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में, कनिष्ठ तथा वरिष्ठ महाविद्यालयों में आयोजित किया जाता है। २००७ में, जलगाँव जिला के ७३ विद्यालयों के ३८७६ छात्रों के साथ आरंभ किया हुआ यह कार्यक्रम, पिछले एक दशक के दौरान भारत के छह राज्यों एवं तीन देशों के करीब दस लाख से अधिक छात्र इसमें सम्मिलित हो चुके हैं।

इस कार्यक्रम को बड़े पैमाने पर विस्तारित करने के लिये वर्ष २०१४ में फाउण्डेशन ने प्रशासन के सामने आयकर अधिनियम की धारा 35AC का प्रमाणपत्र प्राप्त करने की अनुमति माँगी थी। ताकी इससे प्राप्त कायिक निधि के ब्याज पर गाँधी विचार संस्कार परीक्षा जरूरत मंदो एवं ग्रामीण इलाकों में सरलता से पहुंचा सके तथा शाश्वत रुप से इसका आयोजन किया जा सके। सरकार ने इस प्रयास की सराहना करते हुए फरवरी २०१७ में गाँधी विचार संस्कार परीक्षा के लिये ४२.५७ करोड कायिक निधि (कॉर्पस फंड) निर्माण करने की अनुमति प्रदान की गई। किन्तु सीमा मर्यादा केवल ३१ मार्च २०१७ तक की दी गई थी।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये फाउण्डेशन के कार्यकर्ता एवं जैन इरिगेशन के सहकारियों द्वारा किए गये अथक प्रयास से भारत भर के ४ हजार से भी अधिक लोगों तक यह निधि के लिये सहयोग का प्रस्ताव भेजा गया। उनमें से करीब ९४५ लोगों के अतुल्य योगदान के माध्यम से

फाउण्डेशन का लक्ष्य हर छात्र तक पहुँचे गाँधी विचार

इतने अल्प समय में 35AC के अंतर्गत ६,३६,५७,७१९/– की कायिक निधि एकत्रित कर पाये। फाउण्डेशन इस अभियान को सफल बनाने हेतू सहयोग करने वाले सभी व्यक्ति, संस्था और औद्योगिक समूहों का हार्दिक अभिवादन करता है। ♦♦♦

सामुदायिक विकास कार्यों में युवाओं का योगदान

युवाओं को क्रिकेट सामग्री प्रदान करते वक्त गणमान्य तथा धानोरा गाँव के ग्रामजन

८ अप्रैल २०१७ को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा धानोरा गाँव में दूसरा सामुदायिक महिला शौचालय का लोकार्पण कार्य किया गया। इसमें सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह रहा की इस शौचालय का नवीनीकरण कार्य में धानोरा गाँव के युवाओं ने अपना योगदान प्रदान किया।

फाउण्डेशन के कार्यक्षेत्र में स्थित धानोरा गाँव में जब सामुदायिक शौचालय का कार्य चल रहा था, उसमें लोक भागीदारी प्राप्त करने के लिए गाँव के युवाओं को सम्मिलित किया गया। नतीजा यह मिला की युवाओं ने श्रमदान के आधार पर सामुदायिक शौचालय का नवीनीकरण कार्य किया। सामुदायिक महिला शौचालय का लोकार्पण कार्यक्रम के दौरान इन युवाओं को जैन स्पोर्ट्स अकादमी द्वारा क्रिकेट की सामग्री प्रदान कर उनके द्वारा प्राप्त सहभागिता को प्रोत्साहित किया गया।

इस कार्यक्रम में जिला क्रिड़ा अधिकारी श्रीमती सुनंदा पाटील, जैन स्पोर्ट्स अकादमी के श्रीमान देशपांडे तथा गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के डॉ. डी. जॉन चैल्लदूरै, अश्विन झाला, ग्रामीण कार्यकर्ता राजेन्द्र जाधव एवं धानोरा गाँव के महिला सरपंच, सदस्य तथा ग्रामजन एवं बड़ी मात्रा में युवा उपस्थित थे। ♦♦♦

डॉ. आम्बेडकर की १२६ वीं जन्म जयंती मनाई गयी

१४ अप्रैल, डॉ. बी. आर. आम्बेडकर की जन्म जयंती है। इस उपलक्ष में गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के गाँधी तीर्थ परिसर पर सुबह सामूहिक प्रार्थना में डॉ. आम्बेडकर के जीवन और कार्य का परिचय प्रस्तुत किया गया। पिछड़े समुदाय का उद्धार करने वाले डॉ. आम्बेडकर के जीवन की प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने अपने जीवन में जो संघर्ष व अपमान की अनुभूति झेली है उनको याद करते हुए उनके योगदान की गाथा को फाउण्डेशन के कार्यकर्ताओं ने प्रस्तुत किया।

फाउण्डेशन के कार्यकर्ता कोमल शिंदे ने डॉ. आम्बेडकर के जीवन की प्रमुख घटनाओं के साथ उनके संदेश का जिक्र करते हुए कहा कि शिक्षा हमारे जीवन में परिवर्तन का मुख्य आधार है। यह हमें डॉ. आम्बेडकर के जीवन से प्राप्त होता है। शीतल जैन ने डॉ. आम्बेडकर का छात्र जीवन को प्रस्तुत करते हुए कहा कि वे विपुल प्रतिभा के छात्र थे। उन्होंने विश्व की प्रमुख विश्वविद्यालयों जैसे मुंबई विश्वविद्यालय, कोलंबिया विश्वविद्यालय, लन्दन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से शिक्षा प्राप्ति की थी। चंद्रशेखर पाटील ने अपनी अभिव्यक्ति में कहा कि डॉ. आम्बेडकर ने सामाजिक परिवर्तन की नींव प्रस्थापित की, उन्होंने हिन्दू धर्म को नया मुकाम पर पहुंचाने का कार्य किया है। बौद्ध धर्म में उनका धर्मान्तरण एक शुद्ध भावना का प्रतीक बना। क्योंकि उन्होंने धर्मान्तरण करने से पहले कहा था कि मैं ऐसा धर्म अंगीकार करूंगा जो मूलतः भारत और भारतीय संस्कृति से जुड़ा हो और जिसमें हिन्दू धर्म के तत्त्व हो। कार्यकर्ता नरेन्द्र चौधरी ने कहा कि वह एक जाने-माने राजनीतिज्ञ और न्यायविद थे। छुआछूत और जाति-आधारित प्रतिबंधों जैसी सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के लिए उनकी ओर से किए गए प्रयास उल्लेखनीय हैं। सीमा तडवी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि डॉ. बी.आर. आम्बेडकर एक बड़े विद्वान, वकील और स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने लाखों की संख्या में महार नामक अछूत जाति के लोगों के साथ मिलकर महाराष्ट्र के रायगढ़ में सत्याग्रह किया। जो सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक बना। डॉ. जॉन चैल्लदूरै ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पिछले हजारों सालों से पीड़ित व पीछड़े वर्गों की आवाज़ कोई नहीं बना था। प्रयास किये गये है पर वे परिवर्तन ला सके वैसे नहीं बने। पहली बार ऐसा हुआ डॉ. आम्बेडकर ने अपनी शिक्षा के जरिये यह साबित कर दिया की शिक्षा सभी का अधिकार है। ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि वे प्रखर परिवर्तन के प्रतीक बनें और ऐशिया में एक प्रबल क्रान्ति का निर्माण किया। नागरिकत्व की शिक्षा में उन्होंने उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया, संविधान में उनका योगदान बहुमूल्य रहा। सविता महाकाल ने नारी उत्थान में उनके प्रयास की गाथा को प्रस्तुत किया। संतोष भिंताडे ने अपनी बात रखते हुए कहा कि डॉ. आम्बेडकर अपने जीवन व विचार के माध्यम से भारतवर्ष के लिये आदर्श बने। उनके विचारों पर आचरण करके हम नया भारत का निर्माण कर सकते हैं।

अश्विन झाला ने कहा कि उस वक्त भी गाँधीजी और आम्बेडकर की आवश्यकता थी और आज भी उनके विचारों की आवश्यकता है। कोई पहलू पर उनके विचार भिन्न थे इसका मतलब यह नहीं की आज भी उनको चर्चा का विषय बनाया जाये। उन दोनों में कई साम्यता भी थी हमें उनके बारे में बात करनी चाहिये। अहिंसा की नींव पर दोनों एक थे, पिछड़ों के कल्याण व महिला उन्नति में दोनों के विचार समान थे। दक्षिण अफ्रीका में जिस सत्याग्रह की नींव गाँधीजी ने रखी थी, उसी तत्त्वदर्शन पर सन् १९२७ में डॉ. आम्बेडकर ने महाड़ सत्याग्रह किया था। डॉ. भीमराव आम्बेडकर का जीवन संघर्ष और सफलता की ऐसी अद्भुत मिसाल है जो शायद ही कहीं और देखने को मिले।

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के समन्वयक उदय महाजन ने अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषय को स्पर्श करते हुए कहा कि किसी भी राष्ट्रीय नेता को उन्होंने अपने जीवन में किये कार्यों के बारे में उनको याद किया जाना चाहिये, नहीं की उनकी आलोचना के आधार पर। हमें व्यक्तियों की तुलना करने की बजाय उनके विचार को आचरण में लाने का प्रयास करना चाहिये। भूतकाल में वह परिस्थिति तथा समय में घटी घटना को अभी हम न्याय नहीं दे सकते। इसलिए इतिहास को हमें सकारात्मक दृष्टि से देखना चाहिये। गाँधी तीर्थ परिसर पर आयोजित इस कार्यक्रम का सूत्र-संचालन अश्विन झाला ने किया। ***

ग्राम शिविर के द्वारा छात्रों में नवचेतना का निर्माण

फाउण्डेशन के द्वारा १८ से २३ अप्रैल २०१७ तक आयोजित श्रम संस्कार तथा व्यक्तित्व विकास शिविर रवंजे गाँव में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस शिविर में जलगाँव जिले के इर्दगिर्द स्थित गाँव जैसे - धनोरा, विटनेर, सुभाषवाडी, दापोरा, दापोरी, कढोली, जलके, म्हसावद, कुर्हाड़दा, खर्ची, रवंजे, रामदेववाडी, मोहाडी, खडके, खेडगाँव आदी गाँवों से कक्षा ७ से १२ के ८० छात्र-छात्राएं सहभागी हुए थे।

उद्घाटन कार्यक्रम में शिविर के संयोजक वरिष्ठ गाँधीयन अब्दुलभाई, रवंजे के सरपंच विकास पाटील, शाला समिति के अध्यक्ष संतोष पाटील तथा विद्यालय के मुख्याध्यापक के साथ गाँव के प्रमुख अतिथि एवं फाउण्डेशन के कार्यकर्ता एवं शिविरार्थी उपस्थित थे।

सामाजिक शिक्षा के माध्यम से संवेदनशील समाज निर्माण करने कि दिशा में पहल करते हुए शिविर के पांच दिन के दौरान विविध क्षेत्रों के विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया। अब्दुलभाई ने गाँधी विचार व मूल्यों को सामने रखते हुए शिविरार्थियों को संबोधित किया। अनुभूति स्कूल के हर्षल पाटील ने शिविरार्थियों को संस्कार का महत्व बताते हुए साने गुरूजी द्वारा लिखित 'श्याम की माँ' पुस्तक का कथा-कथन प्रस्तुत किया गया। अभिनय कला के लिए सुरेश पाटील, पक्षी निरीक्षण के लिए गिरीश जगताप, जैन फुड पार्क के श्रीमान शितोले और उनके सहयोगी ने आपातकालीन स्थिति में सुरक्षा उपकरण का प्रयोग कैसे करना चाहिए, उनका प्रत्यक्षीकरण करवाया। व्यसन मुक्ति पर फाउण्डेशन के कार्यकर्ता सुधीर पाटील, आकाश दर्शन के लिए जलगाँव के अमोघ जोशी और दिपक तामबोली, अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति जलगाँव तथा औरंगाबाद से कट्यारे और दिलीप शिखरे, पर्यावरण तथा जल, जंगल, जमीन के संदर्भ में जानकारी देने के लिए आशुतोष कुमठेकर आदि विशेषज्ञों ने अपने अनुभव व अपने कौशल्य को शिविरार्थियों के सामने प्रस्तुत किया।

युवा शिविर के दौरान अभिनय कला की प्रस्तुति करते हुए शिविरार्थी

शिविर के अंतिम दिन सभी शिविरार्थियों कों जैन हिल्स स्थित गाँधी तीर्थ से परिचित कराया गया। शिविर के समापन सत्र में अपने आशिवर्चन प्रस्तुत करते हुए फाउण्डेशन के संचालक श्रीमान दलुभाऊ जैन उपस्थित थे। दलुभाऊ जैन ने अपने मनोगत में कहा कि गाँधीविचार हमारे लिए प्रेरणास्थान है, आज पूरा विश्व संकट की स्थिति से गुजर रहा है। उनको गाँधीविचार ही उबार सकता है। आप सब बच्चें भविष्य है, आप के हाथ में हमारे गाँव एवं देश की जिम्मेदारी आनेवाली है। उनको मजबुत बनाने के लिए हमें अधिक कटिबद्ध बनना है ताकि हम अपने भविष्य को सुनिश्चित कर सकें। ♦♦♦

बाल शिविर

हम होंगे कामयाब...- बाल शिविर के दौरान छात्रों का मनोबल बढ़ाते हुए कार्यकर्ता

इस साल का बाल शिविर २५ से २८ अप्रैल २०१७ को लताताई पाटणकर संस्था वावड़दा में सफलता के साथ संपन्न हुआ। इसमें ८ से १४ साल के ६० बच्चों को सम्मिलित किया गया था। इस शिविर के उद्घाटन कार्यक्रम में लताताई पाटणकर, अब्दुलभाई एवं ग्रामजन उपस्थित थे। तीन दिन तक चले इस शिविर में बच्चों को विभिन्न कलाओं से परिचित करवाया गया। इनमें निलेश कुंभार ने मिट्टी से मूर्ति बनाने की कला, जैन इरिगेशन के मीडिया विभाग के किशोर कुलकर्णी ने सुंदर हस्ताक्षर की कला, जलगाँव के दिपक तांबोली ने आकाश दर्शन एवं अब्दुलभाई ने ओरिगामी तथा विभिन्न खेल सिखा कर बच्चों में संस्कार सिंचन का कार्य किया गया। शिविर के समापन सत्र में फाउण्डेशन के डीन डॉ. डी. जॉन चैल्लदूरै उपस्थित थे। उन्होंने बच्चों के साथ प्रेरणादायी प्रसंग साझा किये। ♦♦♦

लंदन में गाँधी कांफ्रेंस

२८ अप्रैल, २०१७, यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लंदन ने '२१ वीं सदी में महात्मा गाँधीः गाँधीवादी विषय-वस्तु और मूल्य' विषय पर एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के डीन डॉ. डी. जॉन चैल्लदूरे को गाँधीजी की विरासत को आगे बढ़ाने में गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन की भूमिका इस विषय पर प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया गया था। डॉ. चैल्लदूरै ने स्काईप के माध्यम से विषय को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि फाउण्डेशन गाँधीजी की विरासत को मल्टीमीडिया के द्वारा प्रस्तुत करता है। उनके साथ गाँधीजी से सम्बन्धित दस्तावेज, अध्ययन, अनुसंधान और प्रकाशन, गाँधी विचार प्रसार के रूप में अन्य कार्यक्रम जैसे मोहन से महात्मा मोबाइल प्रदर्शन तथा ग्रामीण जीवन को समृद्ध करने का प्रयास किया जाता है। इस सम्मेलन में करीब पचास प्रतिभागी सम्मिलित हुए थे। उनमें लॉर्ड भिखु पारेख, डॉ. अभय बंग, डॉ. सुबोध केरकर एवं प्रो. मकरंद परांजपे जैसे महानुभाव उपस्थित थे। ♦♦♦

फाउण्डेशन द्वारा निशुल्क मोतियाबिंद शिविर

ग्रामीण इलाकों में आयोजित मोतियाबिंद शिविर का एक दृश्य

१८ मई २०१७ को रवंजा, दापोरा, दापोरी और डोमगाँव में गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन व कांताई नेत्रालय के संयुक्ततत्त्वावधान में निशुल्क नेत्र मोतियाबिंद जाँच व चिकित्सा शिविर उत्साह के साथ संपन्न हुआ।

देहातों में लोगों की जीवनशैली परिश्रम आधारित रहती है। वे अपने स्वास्थ्य को ज्यादा प्राधान्य नहीं दे पाते है, इसलिए ऐसा भी होता है कि कई लोग उम्र के ५० साल के करीब पहुंचते ही आँख से संबंधित साधारण समस्याएं दिखाई देती है। किन्तु सवाल यह है कि उनमें से अधिकतर लोग किसी भी प्रकार का इलाज लेने के लिए खुद को असमर्थ पाते हैं। नतीजा यह आता है कि मोतियाबिंद जैसी समस्या से पीड़ित लोग अपनी आँखों की रोशनी गवा देते हैं। फाउण्डेशन समग्रलक्षीता के साथ ग्राम विकास का कार्य कर रहा है, इसमें आरोग्य के मुद्दे को भी प्राधान्य दिया जा रहा है। फाउण्डेशन के कार्यक्षेत्र में स्थित गाँवों में करीब १६० मरीजों के आँखों की जाँच करने में आयी। उनमें से करीब १५ मरीजों (रवंजा के ३, दापोरा-दापोरी के १० एवं डोमगाँव के २) की चिकित्सा कांताई नेत्रालय, जलगाँव में निशुल्क हो रही है। इस कार्य में कांताई नेत्रालय के डॉ. सागर चौधरी, फाउण्डेशन के राहुल, सागर, चंद्रकांत व आशुतोष कुमठेकर ने अपना योगदान प्रदान किया है। ♦♦♦

अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस

संग्रहालयों की विशेषता और उनके महत्व को समझते हुए संयुक्त राष्ट्र ने १९८३ में '१८ मई' को 'अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय किया था। इसका उद्देश्य आम जनता में संग्रहालयों के प्रति जागरूकता फैलाना और उन्हें संग्रहालयों में जाकर अपने इतिहास

अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित मान्यवर

को जानने के प्रति जागरूक बनाना है। इसलिये १८ मई को अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस पर गांधी रिसर्च फाउण्डेशन, जिलाधिकारी कार्यालय तथा जिला परिषद जलगाँव इनके संयुक्त तत्वावधान से 'जलगाँव जिले की ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक धरोहर और इसमें प्रशासन की भूमिका' इस विषय के लेकर परीचर्चा का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की प्रस्तावना करते हुये फाउण्डेशन के कार्यकर्ता अश्विन झाला ने बताया की, 'अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय परिषद' १९९२ से प्रत्येक वर्ष एक विषय का चयन करता है एवं जनसामान्य को संग्रहालय विशेषज्ञों से मिलाने एवं संग्रहालय की चुनौतियों से अवगत कराने के लिए स्रोत सामग्री विकसित करता है। उन्होंने आगे कहा कि हमें अपनी राष्ट्रीय धरोहर के संरक्षण के प्रति कटिबद्ध होने की आवश्यकता है। आज हमारे कितने राष्ट्रीय स्मारक की स्थिति दयनीय हो चुकी है। हमें सही तरीके से नयी पीढ़ी के बीच उनके मूल्य को प्रस्थापित करने की आवश्यकता है।

इस दिवस के उपलक्ष में फाउण्डेशन के भुजंगराव बोबडे ने जलगाँव जिला में स्थित ऐतिहासिक धरोहर एवं पर्यटक स्थल पर विशेष प्रस्तुतिकरण किया। उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति में कई बेनमुन ऐतिहासिक स्मारकों को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने निजी तौर पर किये गये संग्रह को भी दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के संग्रह, शिवाजी महाराज पहला हस्तलिखित ग्रंथ 'प्रतापदुर्गामहात्मे', ताडपत्र ग्रंथ, ताम्रपत्र आदि पर भी प्रकाश डाला गया। जलगाँव जिले प्रमुख संग्रहालयों यथा – के.के. मुस संग्रहालय, चालिसगाँव, बहिनाबाई चौधरी संग्रहालय, उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ का खानदेश संग्रहालय, जैन हिल, गाँधी तीर्थ स्थित खोज गाँधीजी की संग्रहालय के महत्व को बताते हुए उनके प्रमुख प्रदर्शों को भी दर्शाया गया।

अपनी प्रस्तुतिकरण में उन्होंने कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया। उनमें एक विषय यह भी था कि राष्ट्रीय स्मारकों का संरक्षण करने में प्रशासन की क्या भूमिका होनी चाहिए। यह विषय भी शामिल था। साथ ही उन्होंने जलगाँव जिले में निजी तौर पर संग्रहकर्ताओं की जानकारी व उनके संग्रह के बारे में बताया।

इस अवसर बोलते हुए जिलाधिकारी किशोर राजे निम्बालकर ने कहा की, संग्रहालय में ऐसी अनेक चीज़ें सुरक्षित रखी जाती हैं, जो मानव सभ्यता की याद दिलाती हैं। संग्रहालयों में रखी गई वस्तुएं प्रकृति और सांस्कृतिक धरोहरों को प्रदर्शित करती हैं। इस दिवस का उद्देश्य विकासशील समाज में संग्रहालयों की भूमिका के प्रति जन–जागरूकता को बढ़ाना है और हम इस दिशा में एक ठोस कदम जरूर उठायेंगे।

इसी कार्यक्रम में फाउण्डेशन के विश्वस्त दलुभाऊ जैन मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित थे। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा की, संग्रहालय में हमारे पूर्वजों की अनमोल यादों को संजोकर रखा जाता है। किताबें, पाण्डुलिपियाँ, रत्न, चित्र, शिलाएं और अन्य सामग्री के रूप में तमाम तरह की वस्तुएं संग्रहालयों में हमारे पूर्वजों की यादों को ज़िंदा रखे हुई हैं। हर देश की संस्कृति को समझने में कई वस्तुएं विशेष योगदान निभाती हैं, जिनमें संग्रहालय प्रमुख हैं। इसलिये हमें संग्रहालयों को भेट देकर इन बातों को समझने की आवश्यकता है। उक्त कार्यक्रम में जिलाधिकारी कार्यालय, जिला परिषद के कर्मचारी एवं फाउण्डेशन के कार्यकर्ता उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का सूत्र संचालन सुधीर पाटील तथा समापन संतोष भिंताडे ने किया। ❖❖❖

फाउण्डेशन द्वारा मिट्टी परीक्षण – जनजागृति अभियान

मिट्टी परीक्षण अभियान के दौरान किसानों से मिट्टी के नमूने एकत्रित करते हुए कार्यकर्ता

कृषि को शाश्वत बनाने का जरिया है कि किसान को जागरूक बनाया जाये, नयी तकनिक के आधार पर वो अपने खेत को जाने। इस संदर्भ में २२ से २७ मई २०१७ के दौरान फाउण्डेशन और आर.सी.एफ (राष्ट्रीय केमिकल्स फर्टिलाईझर्स) के संयुक्ततत्त्वावधान में मिट्टी परीक्षण अभियान चलाया गया। खेत में जाकर मिट्टी का नमूना कैसे लेना है, उनके बारे में फाउण्डेशन के कार्यकर्ता ने किसानों को प्रत्यक्ष रुप से बताया। इस अभियान के दौरान आर. सी. एफ. की डेमो वान गाँव गाँव जाकर किसानों के खेत की मिट्टी का परीक्षण किया गया। मिट्टी की रासायनिक जांच करने से भूमि में उपलब्ध पोषक तत्वों की मात्रा के बारे में जानकारी मिलती है। इस परीक्षण के माध्यम से भूमि की उर्वरकता मापना तथा कौन कौन से तत्वों की कमी है, इनका पता लगा सकते है। मूल तौर पर भूमि में सोलह पोषक तत्व होते है। इनमें कार्बन, हाइड्रोजन, नाईट्रोजन, पोटाश जैसे मुख्य व सूक्ष्म तत्वों का समावेश होता है। इन सभी तत्वों का संतुलित मात्रा में प्रयोग करने से ही उपयुक्त मात्रा में पैदावार ली जा सकती है। साथ साथ इनमें पी.एच. मान को भी ध्यान में रखा जाता है। इन सभी जानकारी के आधार पर किसान अपने खेत और अपनी मिट्टी को नजदीक से जाने और पहचाने। ताकी, जो फसल हम बोने जा रहे हैं उसमें खादों की कितनी–कितनी मात्रा डालना आवश्यक होगा इसका सही–सही पता लगाया जा सके।

इस कार्यक्रम में जलगाँव जिले के खड़के, खर्ची, खंजा, नागदूली, धानोरा, दापोरा, दापोरी, रामदेववाडी, वावडदा, सुभाषवाडी, वडली, जलके, विटनेर, डोमगाँव और म्हसावद इन गाँवों के किसानों की भूमि से कुल ४५९ नमूनों का मिट्टी परीक्षण किया गया। इस कार्य को यशस्वी करने के लिए गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन और आस.सी.एफ के कार्यकर्ताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। ❖❖❖

शांति प्रशिक्षण पर मध्यकाल का मूल्यांकन

यु.इ.एल.सी.आई. (युनाइटेड एवेन्जेलिकल ल्यूथरन चर्चीस इन इन्डिया) चेन्नई स्थित एक संगठन है। इस संगठन द्वारा शांति निर्माण और संघर्ष परिवर्तन विषय पर तीन साल का एक कार्यक्रम चलाया जाता है। शांति निर्माण और संघर्ष परिवर्तन की कला को स्वीकृत कर कई सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षक वृंद को देश के विभिन्न राज्यों में प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इस कार्यक्रम के मध्यकाल सत्र का मूल्यांकन करने के लिए उन्होंने गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन को विनती पत्र भेजा था। फाउण्डेशन के डॉ. जॉन चैल्लदूरै इस मूल्यांकन के लिए २५ से ३० मई, २०१७ तक यु.इ.एल.सी.आई. गये थे। उन्होंने शांति निर्माण और संघर्ष परिवर्तन की विधि, उद्देश्य और प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया। ❖❖❖

किसान उत्पादक मंडल को आर्थिक सहयोग

किसान दूध उत्पादक मंडल को चेक देते हुए फाउण्डेशन के सुधीर पाटील

फाउण्डेशन द्वारा कार्यरत ग्राम विकास की गतिविधियों के अंतर्गत जलगाँव के धानोरा गाँव में किसान दूध उत्पादक मंडल स्थापित किया गया है। यह मंडल पिछले छह माह से कार्यरत है। मंडल के विकास के लिए तथा मंडल में जूड़े नये सदस्यों को गाय-भैंस खरीद ने के लिए फाउण्डेशन के माध्यम से कांताई ग्राम समृद्धि योजना के द्वारा धानोरा दूध उत्पादक मंडल को चार लाख रुपये का आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया है। साथ साथ दापोरा गाँव में स्थित श्री लक्ष्मी महिला गुट की महिलाओं को अपने खेत को तैयार करने तथा उनसे सम्बन्धित सामग्री जैसे बिज, उर्वरक खरीदने के लिए तीस हजार रुपये का आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया है।

इस प्रयास से मंडल के सदस्यों को दैनिक जीवन में होने वाली आर्थिक संकट की स्थिति को नये अवसर में तबदील कर पायेंगे। और अपनी गतिविधियों में स्वाभाविक रुप से समायोजन स्थापित कर पायेंगे। ❖❖❖

नेशनल गाँधीयन लीडरशीप कैंप

आने वाले २०१९ में राष्ट्र गाँधीजी और कस्तूरबा की १५० वीं जन्मजयंती मनाने की तैयारियां कर रहा है। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन बा-बापू १५० जयंती के अंतर्गत कई सारे रचनात्मक कार्यक्रम कर रहा है। इस श्रृंखला के अंतर्गत 'नेशनल गाँधीयन लीडरशीप कैंप' का आयोजन किया जा रहा है। इसमें युवा छात्र-छात्राओं को गाँधीयन नेतृत्व का उमदा अनुभव प्रदान किया जायेगा। इस कैंप में शिविरार्थियों को देश के सुप्रसिद्ध महानुभावों के साथ संवाद करने का मौका मिलेगा, साथ साथ नेतृत्व के नये आयामों को व्यावहारिक रुप से समझेंगे।

हम, आप सभी महानुभावों से यह निवेदन करते है कि आपकी महाविद्यालय / संस्था में से २ से ३ छात्र- छात्राओं / कार्यकर्ताओं के नामांकन भेजने की कृपा करें। उक्त कैंप निशुल्क है एवं यातायात का रेलवे शयनयान का किराया दिया जायेगा।

अन्य कैंप से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट www.gandhifoundation.net की मुलाकात करें। अन्य किसी जानकारी के लिये कैंप समन्वयक से संपर्क करें-

अश्विन झाला
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, जलगाँव - ४२५००१, महाराष्ट्र.
मो. ०९४०४९५५२७२, ०९४२२७७६९३६; फोन: ०२५७-२२६४८०३,
ई-मेल: zala.ashwin@gandhifoundation.net

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा पुरस्कार वितरण समारोह

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन की ओर से महाराष्ट्र की सभी पाठशालाओं एवं महाविद्यालयों में हर साल गाँधी विचार संस्कार परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। इन विचारों को कर्नाटक राज्य में प्रसारीत करने के लिये वर्ष २०१६-१७ में आयोजन किया गया। कर्नाटक के १७ जिलों के ११४ विद्यालय-महाविद्यालयों से लगभग १४ हजार छात्र इस साल गाँधी विचार संस्कार परीक्षा में सम्मिलित हुये।

इस परीक्षा में उच्चतम अंक पाने वाले हर कक्षा के ३ छात्रों तथा सभी समन्वयकों को सम्मानित करने के लिये बेंगलोर स्थित कर्नाटक गाँधी स्मारक निधि के महादेवभाई देसाई सभागृह में १६ जून को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

कर्नाटक गाँधी स्मारक निधि के दिवंगत अध्यक्ष मा. श्रीनिवासैयाजी ने अपने अत्यंत व्यस्त कार्य समय में भी इस पर ध्यान देकर एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया था। नूतन अध्यक्ष डॉ. वूडी पी. कृष्णा ने शेषाद्रीपूरम शिक्षा संस्था के सचिव के नाते हजारों छात्रों को इस परीक्षा में सम्मिलित होने की प्रेरणा दी। परीक्षा के पहले साल कर्नाटक के इस संस्था के सचिव, सहायक सचिव सभी मिलकर इन मूल्यों के बीजारोपण के लिये विशेष रुप से प्रयत्न कर रहें है। शिक्षण संस्थाओं के जनरल सेक्रेटरी, पाठशालाओं के अध्यापक तथा महाविद्यालयों के प्राध्यापक इन सभी का गाँधी विचार संस्कार परीक्षा में छात्ररुपी सहभाग यह दर्शाता है की आज के इस हिंसामय वातावरण में इन विचार संस्कारों की कितनी महती आवश्यकता है।

इस परीक्षा में महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, गुजरात, बिहार तथा गोवा इन ७ राज्यों के ५० जिलो से २०१५-१६ के लिये २,१०,८७० तथा विगत २००७ से लेकर अब तक के लिये ७,४७४ केंद्रों से १०,५४,५४४ छात्रों ने सहभाग लिया। २०१६ के लिये ८५० अध्यापक-प्राध्यापक छात्र के रुप में सहभागी हुये है।

कार्यक्रम में उपस्थित वूडी पी. कृष्णा, नूतन अध्यक्ष ने अपने मनोगत प्रस्तुत करते हुए कहा कि महात्मा गाँधीजी का जीवन संदेश छात्रों तक पहुँचाने के साथ साथ उनमें सत्य, अहिंसा, शांति, प्रेम, बंधुता, सामंजस्य तथा स्वदेशी भावों को जगाने तथा उन्हें संस्कारवान बनाने हेतू गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा आयोजित गाँधी विचार संस्कार परीक्षा अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई है।

बडोदा के हिम्मतबहाद्दर जितेन्द्रजी गायकवाड ने गुजरात में भी इस परीक्षा का आयोजन किया जाय। जिससे गुजरात की सभी पाठशालायें भी इसमें शामिल हो सकेगी। गाँधीजी के सिद्धांतों का, विचारों का प्रसार-प्रचार करने का आपका जो महान उद्देश्य है वह भी पूरी तरह से इससे

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा का पारितोषिक वितरण कार्यक्रम, कर्नाटक

सफल हो जायेगा। हम इस कार्य के लिये आपको सभी तरह से धन्यवाद और सहयोग देते रहेंगे।

फाउण्डेशन के सहयोगी भुजंगराव बोबडे ने कहा कि पद्मश्री डॉ. भवरलालजी जैन ने जिस दूरदृष्टी से इन परीक्षाओं की शुरुआत की थी – छात्रों से पहले अध्यापकों में अगर यह विचार-संस्कारों के बीज बोए गये तो सुसंस्कारीत पीढ़ियों का निर्माण अत्यंत सुखकर होगा। यह दृष्टिकोन आज उन्ही के वारीस श्री अशोक भाऊ जैन के नेतृत्व में सफल हो रहा है ऐसा हमें प्रतीत होता है।

गाँधी विचार संस्कार कर्नाटक समन्वयक आपको बताने में हमें आनंद है कि, हम गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा आयोजित गाँधी विचार संस्कार परीक्षा का यह अभिनव प्रयोग सफल रुप से संपन्न कर रहे हैं। इसमें कोई संदेह नही की महात्मा गाँधीजी के विचारों को प्रस्तुत रखने का सराहनीय प्रयास आपके द्वारा हो रहा है। यह बहुत महत्वपूर्ण है।

विभिन्न जिलो के मुख्याध्यापक तथा प्राचार्य का प्रत्युत्तर

महाविद्यालयों में २ अक्तुबर को गाँधी जयंती के अवसप पर गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा आयोजित गाँधी विचार संस्कार परीक्षा का आयोजन किया गया। परीक्षा के हेतु छात्रों ने गाँधीजी के जीवन मूल्यों पर आधारीत किताबें पढी तथा वह अपने जीवन में भी आचरण में लाने को उत्सुक है। युवा कार्य में गाँधीजी के विचारों का मंथन और आचरण आज अत्यंत आवश्यक है। छात्रों में राष्ट्रप्रेम की भावना अवश्य जागृत होनी चाहिए। क्योंकि वही आने वाले भारत का भविष्य हैं।

इन समारोह के माध्यम से महात्मा गाँधी द्वारा परिकल्पित समग्र विकास के लक्ष्य के प्रति युवाओं को तैयार किया जाए, जिससे ये विचार विशाल बहुजन समाज तक पहुंचे सकें। सामाजिक जागरण, राष्ट्रीय एकता तथा अन्य गाँधीवादी मूल्यों की समझ और मानव समुदाय की बेहतरी के लिए इसके उपयोग को प्रोत्साहित करना इसका मुख्य उद्देश्य है जो इस समारोह में पुरी तरह सफल रहा। ♦♦♦

सामुदायिक नर्सरी बनाने में फाउण्डेशन का योगदान

नर्सरी में बिजारोपण करते हुए ग्रामजन एवं कार्यकर्ता

आसपास के गाँवों में फाउण्डेशन के द्वारा पिछले साल करीब १७००० पौधे लगाये थे। समय समय पर इनका ऑडिट भी करते रहे। इन गाँवों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने एवं सबल रुप में कार्य करने के लिए फाउण्डेशन के कार्यकर्ता द्वारा निरंतर इस विषय पर जन-जागृति कार्यक्रम एवं रचनात्मक कार्यक्रम किये जाते है। प्रति वर्ष लगाये जाने वाले पौधों के लिए गाँव में सामुदायिक नर्सरी होनी चाहिए। ताकी आने वाले समय में गाँव में लगाने के लिए आवश्यक पौधे खुद गाँव तैयार कर सके। इस उद्देश्य से रवंजे गाँव में पुरुष बचत गुट को तैयार कर इस विषय में एक प्रयास किया जा रहा है। प्राथमिक स्तर पर इस कार्य में रवंजे स्थित माऊली पुरुष बचत गुट द्वारा करीब १०० पौधे तैयार करने की कवायद शुरु कर दि गई है। इस कार्य में फाउण्डेशन के ग्रामीण कार्यकर्ता स्थानिक लोगों को मार्गदर्शन प्रदान कर रहे है। ♦♦♦

संचालक मंडल की बैठक

संचालक मंडल की बैठक में उपस्थित सदस्यगण

२७ जून २०१७ को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक मंडल की बैठक जैन हिल्स पर संपन्न हुई। इस बैठक में फाउण्डेशन के संचालक मंडल के सदस्य डॉ. अनिल काकोडकर, दलीचंद ओसवाल, डॉ. डी.आर मेहताॅ, अशोक जैन, सुदर्शन आयंगार, श्रीमती ज्योति जैन तथा अनील जैन उपस्थित रहे। इस बैठक में फाउण्डेशन के चेअरमैन न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारीजी विडीयो कॉन्फ्रेंस के जरिए सहभाग हुए थे।

इस बैठक में फाउण्डेशन के पिछले साल के दौरैन किए गये कार्यों की जानकारी फाउण्डेशन के डॉ. जॉन चैल्लदूरै ने प्रस्तुत किया। एवं आनेवाले समय में गाँधीजी और कस्तूरबा की १५० वीं जन्म जयंती के उपलक्ष में रचनात्मक कार्य किया जायेगा। इस विषय में निम्न प्रकार के निर्णय लिये गये।

१. भारत के विभिन्न प्रदेश के गाँवों को सम्मिलित कर करीब १५० गाँव में रचनात्मक कार्य का संकल्प।
२. ग्राम विकास में उपयुक्त प्रौद्योगिकी आधारित शाश्वत विकास की संभावना को सार्थक करने कि दिशा में कार्य।
३. देश की अन्य प्रमुख संस्थाओं के साथ मिलकर गाँधी विचार संस्कार परीक्षा का आयोजन, जिससे प्रति वर्ष १० लाख छात्र तक पहुँच सके।
४. सत्य और अहिंसा आधारित जीवनशैली को बढावा देने के लिए प्रति वर्ष एक शिशिर कार्यक्रम का आयोजन। ♦♦♦

कारागृह में गाँधीविचार की नींव

फाउण्डेशन द्वारा कार्यरत गाँधी विचार संस्कार परीक्षा के कार्यक्षेत्र को विस्तृत रूप प्रदान करते हुए इसमें बंदीजनों को सम्मिलित किया है। नागपुर स्थित मध्यवर्ती कारागृह के १२५ बंदीजन एवं ३४ कर्मचारियों को इस परीक्षा में निःशुल्क सम्मिलित किया गया है। कारागृह में गाँधी विचार संस्कार परीक्षा को सफल करने के लिए कारागृह की अधीक्षक श्रीमती राणी भोसले ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। ♦♦♦

श्रद्धांजलि

स्व. डॉ. श्रीनिवासैया

कर्नाटक बेंगलुरु गाँधी स्मारक निधि के चेयरमैन डॉ. श्रीनिवासैया का निधन ६ अप्रैल २०१७ को उम्र के ९२ साल में हो गया। हम अपने प्यारे परम श्रद्धेय श्रीनिवासैया जी के निधन से बहुत दुखी हैं। राष्ट्रीय गाँधीवादी बिरादरी के लिए एक अपूरणीय क्षति है। फाउण्डेशन द्वारा कार्यरत गाँधी विचार संस्कार परीक्षा को आपने कर्नाटक में फैलाने के लिए अथक प्रयास किया। उनकी फलश्रृति के आधार पर ही तो कर्नाटक में पहले साल में ही १७ से अधिक जिलों के १४००० छात्रों तक गाँधी विचार पहुंच पाया। इनमें उनकी नैतिक सहायता निस्संदेह प्रमुख कारण है। आप अपनी कथनी और करनी के माध्यम से सेंकड़ो युवाओं एवं कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बने। परम श्रद्धेय डॉ. श्रीनिवासैया को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है। ♦♦♦

पाठकों के अभिमत

'खोज गाँधीजी की' पत्रिका पर हमें पाठकों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिये प्राप्त कुछ पाठकों के अभिमत **– सम्पादक**

आदरणीय सम्पादकजी, प्रणाम

आपके कुशल सम्पादन में खोज गाँधीजी की नियमित प्राप्त होती है। आप इस पत्रिका के माध्यम से एक महान कार्य कर रहे हैं। वास्तव में गाँधीजी एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक सोच है, एक दर्शन है और एक सशक्त विचारधारा है। जो भारतीय संस्कृति की आस्था की पुष्ट करती है और इसे आगे बढ़ाती है।

आज के सन्दर्भ में गाँधीजी और अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। जब समूचा विश्व युद्ध के संकट से जूझ रहा है, तब बड़े से बड़ा लक्ष्य अहिंसा से प्राप्त किया जा सकता है।

सम्पादकीय में आपने गाँधीजी के विचार और उनकी अहिंसात्मक मानव समाज की अवधारणा को बड़े स्पष्ट और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है।

पत्रिका के लेख और फाउण्डेशन की गतिविधियां ज्ञान परक हैं। आशा है अधिक से अधिक लोग इनसे प्रेरणा लेंगे और अपने आदर्श बनाएंगें। आपके प्रयास को नमन।

शुभकामनाओं के साथ।

डॉ. मंगल प्रसाद, *सम्पादक-भाषा स्पंदन, कर्नाटक हिंदी अकादमी, ८५३, ८ वाँ ब्लॉक, कोरमंगला, बैंगलूर – ५६००९५. २६/०४/२०१७*

♦♦♦

सुविचार

श्रमजीवियों को भी उसी तरह जीवन-यापन का अधिकार होना चाहिए जिस प्रकार आज पढ़े-लिखों को है, और उनके लिए अनुकूल अवसरों का निर्माण होना चाहिए।

*– **महात्मा गाँधी,** गाँधीजी की सूक्तियां, पृ.९४*

कृतज्ञता

स्नेही पाठक गण,

सहृदय नमस्कार, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन गाँधीविचार प्रसार के लिए साहित्य व रचनात्मक कार्य दोनों आयामों के आधार पर कार्यरत है। फाउण्डेशन के संस्थापक परम श्रद्धेय भवरलालजी जैन की अदम्य इच्छा शक्ति की प्रेरणा से कई गतिविधियां इस फाउण्डेशन के द्वारा साकार रुप धारण कर रही है। गाँधीविचार जनसमुदाय तक पहुँचाने के प्रयास में 'खोज गाँधीजी की' पिछले छह साल से नि:शुल्क प्रकाशित और वितरित की जा रही है। फिर भी हमारे कुछ पाठक इस नेक कार्य में अपना योगदान देते है।

गुजरात के सर्वोदय कार्यकर्ता मोंघीबेन म्यात्रा ने इस कार्य कि सराहना करते हुए पाँच हजार रुपये का चेक भेजा है। इस सहयोग के लिए गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन मोंघीबेन म्यात्रा का सहृदय अभिवादन करता हैं।

– सम्पादक

♦♦♦

संग्रहालय-दर्शकों के अभिमत

'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय को देखने के लिये हजारों लोग प्रतिदिन गाँधी तीर्थ पहुंचते हैं। प्रस्तुत है संग्रहालय के विषय में कुछ दर्शकों के अभिमत **– सम्पादक**

यद्यपि मैंने कई बार गाँधी आश्रम (साबरमती) के दर्शन किये हैं किन्तु इतना दुर्लभ और अहिंसात्मक अनुभव उस वक्त नहीं हुआ जितना इन क्षणों में मैं महसूस कर रहा हूँ शायद इसने तमाम कारणों में तकनीक भी शामिल हैं।

ये हमारी राष्ट्रीय धरोहर/निरक्षर है जो आगामी समय में हमारे नौनिहालों को प्रेरित करती रहेंगी। जी.आर.एफ. को शत्-शत् नमन।

उमेश श्रीवास्तव, *सहायक सेवानिवृत्त प्राचार्य, ३४ आनंद व्हिला, अहमदनगर ११/०४/२०१७*

♦♦♦♦♦♦♦♦

गाँधी तीर्थ अपने नाम को सार्थक करता हुआ प्रतीत हो रहा है। सत्य, अहिंसा जैसे मानवीय गुणों को दिव्यता प्रदान करता हुआ महात्मा का जीवन चरित्र, सत्य में ही जीवन है – चरितार्थ होता दर्शनीय बन पड़ा है।

स्वतंत्रता के प्रणेता, ऐसे महामानव को शत्-शत् वन्दन।

म्युजियम की परिकल्पना, निर्माण, उद्देश्य, संचालन, सेवा भाव, प्रस्तुति, सर्वांग सुंदर है। शहर व बाहर के लिए यथार्थ तीर्थ – जो हर दृष्टि से दर्शनीय प्रेरणादायी, स्वस्थ दिशादर्शक व ग्रहणीय है।

औरों को भी/सभी को बताएँ। बहुत बहुत धन्यवाद।

दिलीप हरगोविंदराम मोतीरामाणी, *जलगाँव. १४/०४/२०१७*

♦♦♦

अतिथि देवो भव!

महात्मा गाँधी के जीवन एवं उनके कार्यों को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन स्थित 'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय में अत्याधुनिक तकनीक के साथ समन्वित करके युवाओं के लिए कैसे उपयोगी बनाया गया है? इसे देखने व समझने के लिए अतिथियों का स्वाभाविक प्रवाह होता रहता है। अतिथि हमारे लिये देवतुल्य हैं।

सयानंद साहेब, आयुक्त बागवानी, भोपाल
०४.०४.२०१७

ब्रिगेडिअर यादव, अमरावती
०६.०४.२०१७

डॉ. ऋची कपुर, यू. के.
१३.०४.२०१७

पी. एस. नायडू, ऑडिटर, हैद्राबाद
१३.०४.२०१७

ब्रिगेडिअर अनुराघ वीज, औरंगाबाद
१५.०४.२०१७

मेजर जनरल अनुज माथुर, मुंबई
१६.०४.२०१७

बालकृष्ण पाटील, जेष्ठ सम्पादक, साप्ताहिक धरणी, धरणगाँव - २३.०४.२०१७

मिसेस झथिदा, मिस झुबेदा, डायरेक्टर मिनिस्ट्री ऑफ वॉटर, टांझानियाँ - २३.०४.२०१७

विकास कोबाल, मॉरिशियस
२५.०४.२०१७

सुशील चंद्रा, सेंट्रल रेल्वे सेफ्टी इन्चार्ज, मुंबई
२८.०४.२०१७

जैन इरिगेशन कम्पनी के सहकारीओं के पाल्य, जलगाँव
०७.०५.२०१७

अबुट्टकल कोया, मॅनेजिंग डायरेक्टर, गेबेरिट कम्पनी, स्विट्जरलैंड - ११.०५.२०१७

वोल्फगैंग रीथ, सीईओ, स्विट्जरलैंड प्लान्ट, यु.एस.ए
१४.०५.२०१७

सुक्षमा चव्हाण, डीवायएसपी, पुणे
२४.०५.२०१७

अबिदा बेगम, कर्नाटक गाँधी स्मारक निधि, बैंगलोर
२५.०५.२०१७

डॉ. श्रीपाद जोशी, अध्यक्ष, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, नागपूर - २८.०५.२०१७

शुजी आयबे, डिप्युटी जनरल मॅनेजर, फ्रोझन फुड डिपार्टमेंट, जपान - ०१.०६.२०१७

चित्रशृंखला–१८

बारडोली

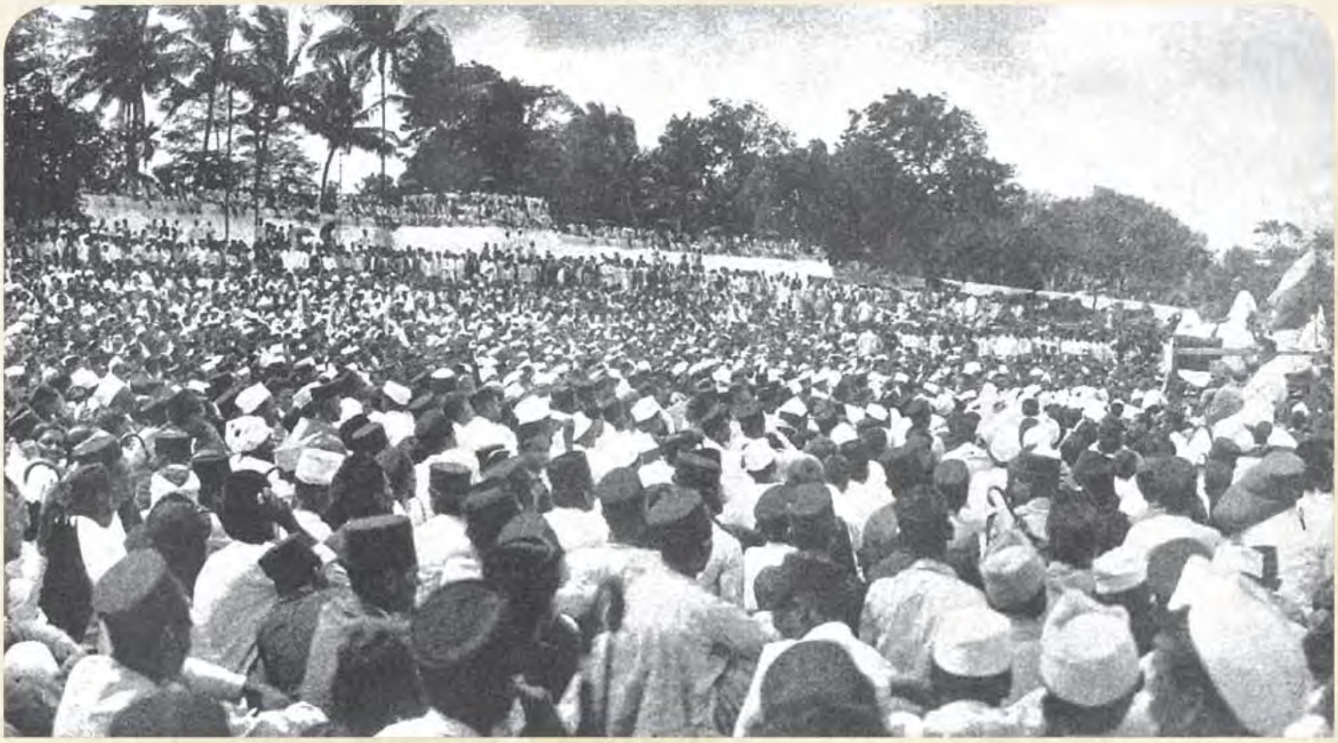

बारडोली सत्याग्रह के समय सूरत में एक जन सभा का दृश्य, १९२८

महात्मा गाँधी बारडोली में एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए सरदार पटेल तथा प्यारेलाल स्टेज पर बैठे है, जनवरी १९३९

महात्मा गाँधी, कस्तुरबा, सरदार वल्लभभाई पटेल तथा अन्य जनों के साथ बारडोली में एक सभा में जाते हुए, जनवरी १९३९

सत्याग्रह के कानून के अनुसार वल्लभभाई ने सरकार से विनयपूर्वक समझोते के लिए कहा: 'संभव है आप भूल न कर रहे हों। यह भी हो सकता है कि लोगों ने मुझे भुला दिया हो। पर आप तो पंच नियुक्त करें और उनसे इन्साफ करवायें। यह दावा मत किजिए कि हम भूल कर ही नहीं सकते। इस विनय का अनादर करने की भयंकर भूल करके सरकार ने लोगों के लिए सत्याग्रह का मार्ग साफ कर दिया है।'